Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۟ وَاغْفِرْ لَنَا ۟ وَارْحَمْنَا ۟ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ○

(सूरत अल-बक़रा आयत :287)

अनुवाद: और हे हमारे रब्ब, हम पर कोई इस प्रकार का न डाल जो हमारी ताकत से बढ़ कर हो और हमें क्षमा कर दे तू ही हमारा मौला है। अत: हमें काफिर क़ौम के मुकाबला में सहायता प्रदना कर।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 4

अंक 3

साप्ताहिक बदर क़ादियान

The Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

10 जमादी अव्वल 1440 हिजरी कमरी 17 सुलह 1397 हिजरी शमसी 17 जनवरी 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।

दुनिया से उस की सुन्दरता से बहुत दिल न लगाओ, क़ौमी गर्व मत करो, किसी औरत से ठट्ठा हंसी मत करो, पतियों से वह मांग न करो जो उन का सामर्थय से बाहर हो, ताकि तुम मासूम तथा पवित्र होने की अवस्था में कब्रों में जाओ।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

इन मौलवियों पर अफ़सोस। यदि इनमें ईमानदारी होती तो वे संयम के मार्ग से अपनी संतुष्टि हर प्रकार से कराते। ख़ुदा ने तो नेक आत्माओं की संतुष्टि कर दी। परन्तु वे लोग जो अबूजहल की मिट्टी से बने हुए हैं वे उसी मार्ग को चुनते हैं जो अबूजहल ने चुना था। एक मौलवी साहिब ने **मेरठ** से रजिस्टर्ड पत्र द्वारा सूचित किया है कि अमृतसर में **नदवतुलउलमा** का सम्मेलन है इस में आकर परस्पर वार्ता करनी चाहिए। परन्तु स्पष्ट रहे कि यदि इन विरोधियों की नीयतें अच्छी होतीं और विजय पराजय का विचार न होता तो उनको अपनी संतुष्टि हेतु नदवा इत्यादि की कोई आवश्यकता न थी। हम नदवा के विद्वानों को अमृतसर के विद्वानों से पृथक नहीं समझते। एक ही आस्था एक ही प्रकार एक ही तत्व है। प्रत्येक को अधिकार है कि **क़ादियान** में आए, परन्तु विवाद के लिए नहीं अपितु सत्य की खोज के लिए। हमारे भाषण को सुने। यदि सन्देह रहे तो शालीनता और शिष्टाचार के नियमों का अनुसरण करते हुए अपने संदेहों का निराकरण कराए। वह जब तक क़ादियान में निवास करेगा हमारा **अतिथि** समझा जाएगा। हमें नदवा इत्यादि की आवश्यकता नहीं और न उसकी ओर देखने की आवश्यकता है। ये समस्त लोग सच्चाई के दुश्मन हैं। परन्तु संसार में सच्चाई का प्रसार होता चला जाता है। क्या यह ख़ुदा का श्रेष्ठतम चमत्कार नहीं कि उसने आज से बीस वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में अपनी ईशवाणी से स्पष्ट कर दिया था कि लोग तुम्हारी असफलता के लिए बड़े प्रयत्नशील रहेंगे और नाख़ूनों तक ज़ोर लगाएँगे परन्तु अन्ततः मैं तुम्हें एक बड़ी जमाअत बनाऊँगा। यह उस समय की ईशवाणी है जब कि मेरे साथ एक व्यक्ति भी नहीं था। फिर मेरे दावे के प्रकाशित होने पर विरोधियों ने एड़ी चोटी के ज़ोर लगाए। अन्ततः उपर्युक्त भविष्यवाणी के अनुसार यह सिलसिला फैल गया। आज की तिथि तक ब्रिटिश इण्डिया में यह जमाअत एक लाख से भी कुछ अधिक है। नदवतुलउलमा को यदि मरना याद है तो बराहीन अहमदिया और सरकारी लेख को देखकर बताएं कि क्या यह चमत्कार है या नहीं। फिर जब कि क़ुर्आन और चमत्कार दोनों प्रस्तुत किए गए तो अब विवाद किस लिए?

ऐसा ही इस देश के गद्दी-नशीन और पीरज़ादे धर्म से ऐसे दूर और अपने स्वयं के बनाए हुए रीति-रिवाजों में रात-दिन ऐसे व्यस्त हैं कि उनको इस्लाम की मुसीबतों और कठिनाइयों की कुछ भी सूचना नहीं। उनके जल्सों में यदि जाओ तो क़ुर्आन शरीफ़ और हदीस की पुस्तकों के स्थान पर नाना प्रकार के तंबूरे, सारंगियां, ढोलकियां और क़व्वाल इत्यादि बिदअत के सामन दृष्टिगोचर होंगे और फिर इसके बावजूद मुसलमानों के पेशवा होने का दावा, आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण पर हंसी ठट्ठा और उनमें से कुछ स्त्रियों का लिबास धारण करते हैं और हाथों में मेंहदी लगाते हैं, चूड़ियाँ पहनते हैं और अपने जल्सों में क़ुर्आन शरीफ़ के बारे में कवितायें पढ़ना पसन्द करते हैं। ये ऐसे पुराने गंद हैं जिनके दूर होने की कल्पना करना भी कठिन है तथापि ख़ुदा अपनी शक्तियों का प्रदर्शन करेगा और इस्लाम का समर्थक होगा।

स्त्रियों को कुछ उपदेश

हमारे इस युग में कुछ विशेष कुरीतियाँ हैं जिनमें स्त्रियां उलझी हुई हैं। वह एक से अधिक विवाह को नितांत बुरी दृष्टि से देखती हैं या यों कहें कि वे उस पर ईमान नहीं रखतीं। उन्हें ज्ञात नहीं कि ख़ुदा की शरीअत में हर प्रकार की चिकित्सा निहित है। अत: यदि इस्लाम में एक से अधिक विवाह का मामला न होता तो ऐसी परिस्थितियां जो आज मनुष्यों के लिए दूसरे विवाह हेतु विवश कर देती है, इस शरीअत में उनका कोई समाधान न होता। उदाहरणार्थ यदि स्त्री दीवानी या पागल हो जाए या कोढ़ी हो जाए या सदा के लिए किसी ऐसी बीमारी का शिकार हो जाए जो बेकार कर देती है अथवा कोई अन्य ऐसी परिस्थिति समक्ष आ जाए कि स्त्री दया की पात्र हो, परन्तु किसी लिहाज़ से असमर्थ हो जाए और पुरुष भी दया का पात्र, जब वह बिना विवाह के धैर्य न रख सके। तो ऐसी स्थिति में पुरुष की शक्तियों पर अत्याचार है कि उसके दूसरे विवाह की अनुमति न दी जाए। वास्तव में ख़ुदा की शरीअत ने इन्हीं मामलों पर दृष्टि रखते हुए पुरुषों के लिए यह मार्ग

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, सितम्बर 2018 ई (भाग-3)

हुज़ूर अनवर ने लजना से जो संबोधन फ़रमाया वह आज की समस्याओं का वास्तविक समाधान है, काश सारी दुनिया इस पर अनुकरण करे ।

जलसा ने हमें बहुत प्रभावित किया है। हुज़ूर ने जो शांति और प्रेम का संदेश दिया है, हम उसे आगे लाऐंगे। हुजूर अनवर ने इज़्ज़त तथा सम्मान तथा भाईचारे की जो सन्देश दिया इसी की आज दुनिया को ज़रूरत है। जलसा में इतनी बड़ी संख्या और अनुशासन को देखकर बहुत प्रभावित हुआ हूँ।

(सेनीगाल के एक बड़े शहर अमबोर के मेयर और सांप्रदाय मुरीद के ख़लीफा के प्रतिनिधि अल्हाजी फ़ालोसिला सिहब)

हुज़ूर अनवर का व्यक्तित्व बहुत नूर वाला है, हुज़ूर को देख कर और जमाअत अहमदिया के लोगों को देख कर पता चला है कि आज एकता केवल जमाअत अहमदिया के पास ही है हुज़ूर अनवर को राजनीतिक मामलों और दुनिया के हालात पर माहारत प्राप्त है। मैं समझता हूं कि जमाअत अहमदिया भविष्य में सभी मुसलमानों को जमा कर सकती है, मुझे यह जमाअत अपने लक्ष्य में बहुत गंभीर लगती है। मैं हमेशा इस जलसा को और हुज़ूर अनवर की मुलाकात को याद रखूंगा।

(ताज़ाकिस्तान के एक मेहमान और राजनेता मिर्ज़ा रहीम साहिब)

मैं जलसा की व्यवस्था से बहुत प्रभावित हुई हूँ, आतिथ्य और सहयोग का यह उदाहरण मैंने जीवन में पहली बार देखा है। हुज़ूर अनवर ने लजना को जो संबोधन फ़रमाया वह आज की समस्याओं का वास्तविक समाधान है। काश सारी दुनिया इस पर अनुकरण करे। हुज़ूर अनवर को पत्रकारिता और आज के मीडिया के मुद्दों पर पर्याप्त महारत प्राप्त है। मैं मुलाकात से पहले, यह समझती थी कि कि हुज़ूर केवल आध्यात्मिक व्यक्ति है। लेकिन मुलाकात में पता चला कि हुज़ूर आध्यात्मिक व्यक्ति होने के साथ दुनिया के विभिन्न समस्याओं के विषय में जानकारी रखते हैं और हुज़ूर उन का समाधान देते हैं।

(एक मेहमान महिला व्याख्याता, दिल अफ़रोज़ रसतूमह साहिबा)

सारी व्यवस्था बहुत अच्छी थी, यह सब खिलाफ़त की बरकत है। हिजाब के बारे में हुज़ूर अनवर का विस्तृत जवाब बहुत अच्छा लगा। मुझे लगता है कि हुज़ूर अनवर इस उम्र की महिलाओं के अधिकारों के बारे में बहुत चिंतित हैं। आज जमाअत अहमदिया ही है जो हुज़ूर अनवर के नेतृत्व में महिलाओं के अधिकार इस्लामी शिक्षा की रोशनी में उजागर कर रही है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ महिला को पर्दा वाली बना कर समाज तथा अगली पीढ़ी को संरक्षित कर रहे हैं।

(सम्मान अमान साहिब सदर जमाअत ताज़किस्तान)

जलसा में शामिल होने वाले सम्माननीय मेहमानों के ईमान वर्धक प्रतिक्रियाएं ।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

ख़िताब हुज़ूर अनवर काम करने वालों के निरीक्षण के अवसर पर

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने तशह्हुद तऊज़ तथा तसमिया के बाद फरमाया : अल्लाह तआला के फज़्ल से जमाअत अहमदिया जर्मनी का जलसा सालाना शुरू हो रहा है। अफसर साहिब जलसा सालाना और बाकी क्षेत्रों की भी जो रिपोर्ट मुझे मिली हैं उसके अनुसार अल्लाह तआला की कृपा से इस साल पाकिस्तान से जो नए लोग आने वाले हैं, उन्होंने भी जलसा की तैयारी के लिए अपने आप को पेश किया और नि:स्वार्थ हो उन्होंने बहुत सेवा की है। अल्लाह तआला उन सभी को बदला दे। जो लोग पहले से ही काम कर रहे हैं वे तो साथ काम कर ही रहे हैं। अल्लाह तआला उन्हें अधिक काम करने की तौफीक़ बढ़ाए तथा उनकी क्षमता को बढ़ाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : जहां तक जलसा की व्यवस्था का संबंध है, इसमें प्रत्येक वर्ष कुछ न कुछ सुधार होता है। पिछले साल की कमियों की तरफ नज़र रखी जाती है। मुझे आशा है कि इस वर्ष भी जो ध्यान प्रबन्ध किए गए हैं उन में बेहतरी की तरफ ध्यान होगा और अब तक जो मैंने देखा है तो मेरा विचार है कि बेहतरी की गई है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : इस वर्ष एक बात की शिकायत लोगों से आ रही है और इस विभाग के कार्यकर्ताओं को विशेष रूप से इसे देखना होगा कि पहले ख़ुत्बा जुम्अ: के बाद नमाज़ पढ़ने के लिए ऊपर मंजिल पर अंतिम कोने में जाया करता था, अब मैं वहां नहीं जाऊंगा, बल्कि मैं यहां इसी हॉल में नमाज़ पढ़ाऊंगा। इसके लिए प्रबंधन करने वालों ने यह प्रबन्ध किया है बाहर एक मार्की लगाई गई है जिस में नमाज़ी अधिक होने पर नमाज़ पढ़ेंगे। उनका मानना है कि पूरा over flow इसमें आ जाएगा लेकिन जो मुझे लिखने वाले हैं उनका मानना है कि यह जगह तंग पड़ जाएगी। बहरहाल, जगह का तंग पड़ना एक आधार से तो अच्छा है लेकिन प्रशासन को यह देखना चाहिए कि इस कारण से किसी प्रकार का बुरा प्रशासन न हो। यदि वह जगह थोड़ी कम है तो इसकी वैकल्पिक व्यवस्था पहले से की जानी चाहिए। यह नहीं कि समय पर तुरंत प्रबंध किया जाना चाहिए। इसलिए, जैसा कि मैंने कहा, इस विभाग में काम कर रहे कार्यकर्ता, और पर्यवेक्षकों और उनके अफसर तथा नाज़िम पहले इस बात का ध्यान रख लें ताकि समय पर कोई भीड़ पैदा न हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "इस व्यवस्था में, विशेष रूप से महिलाओं में, शौचालयों के लिए मैंने ध्यान दिलाया था, इस वर्ष इस में सुधार किया जाना चाहिए और बहुत संख्या में होनी चाहिए। उनके साथ महिलाओं की ज़रूरतें हैं और बच्चे हैं, इसलिए इस तरह उनकी ज़रूरत पुरुषों से अधिक है, और प्रबंधन पर भी ध्यान देना चाहिए। उन अधिकारियों को भी ध्यान देना चाहिए। जो लोग अफसर हैं उन को भी ध्यान देना चाहिए। यदि नहीं, तो यह सोचें कि 12 घंटे में या 24 घंटे में क्या किया जा सकता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ फरमाया: जो मूल बात काम करने वाले कार्यकर्ताओं की है जैसा कि मैंने कहा कि अब काम के आधार पर तो हर विभाग में कार्यकर्ता प्रशिक्षित हो गए हैं, चाहे वह भोजन पकवाने

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

साक्षात आज्ञापालन तथा आज्ञाकारिता के आदर्श आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बदरी सहाबी

हज़रत साबित बिन ख़ालिद अंसारी, हज़रत अब्दुल्लाहह बिन अरफा हज़रत उतबा बिन अब्दुल्लाह, हज़रत क़ैस बिन अबी सअसअः, हज़रत उबैदा बिन हारिस रज़ि अल्लाह तआला अन्हुम की पवित्र जीवनी का उल्लेख

इंडोनेशिया के एक पुराने सिलसिला के सेवस वाक्फे ज़िन्दगी, मुबल्लिग़ सिलसिला , पूर्व रईसुत्तबलीग़ और प्रिंसिपल जामिया अहमदिया इंडोनेशिया के रूप में सेवाएं करने वाले अदरणीय सियूती अहमद साहिब का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 30 नवम्बर 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ
اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज जिन सहाबा का वर्णन करूंगा उन में से पहले हज़रत साबित बिन ख़ालिद अंसारी हैं। यह कबीला बनू मालिक बिन नज्जार में से थे। जंग बदर और उहद में शामिल हुए और इसी जंग में शही हुए। कुछ के निकट बेअरे मऊना की घटना में शहीद हुए।

(अल्इस्तियाब जिल्द 1 पृष्ठ 198, प्रकाशन दारुल जैल बैरूत 1992 ई)

फिर अब्दुल्लाह इब्न अरफा हैं। आप हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब के साथ हिजरत हब्शा में शामिल हुए थे और एक रिवायत जो हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद की है वह कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें नज्जाशी की तरफ भेजा था और हम लोग उसी के पास थे।

(अहमद बिन हंबल जिल्द 2 पृष्ठ 201 हदीस 4400 मसनद अब्दुल्लाह बिन मसूद मुद्रित आलेमुल कुतुब बैरूत 1998 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अरफा जंग बदर में शरीक हुए थे।

(अल्इस्तियाब जिल्द 3 पृष्ठ 949 अब्दुल बिन इब्न अरफा, प्रकाशन दारुल जैल बैरूत 1992 ई)

फिर, अतबा बिन अब्दुल हैं उनकी माँ का नाम बुसरा-बिनत-ज़ैद था। बैअत उक्बः और उहद में शामिल हुए थे। (अल्इस्तियाब जिल्द 3, पृष्ठ 1026 उतबा बिन अब्दुल्लाह मुद्रित दैरूल जैल बैरूत 1992) (अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 430 उतबा बिन अब्दुल्लाह मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990)

फिर कैस बिन अबी सअसआ हैं। यह अंसारी थे। हज़रत क़ैस के पिता का नाम अमरो बिन ज़ैद था, लेकिन वह अपने उपनाम अबू सअसआ से प्रसिद्ध थे। हज़रत क़ैस की मां का नाम शीबा बिनत आसिम था और हज़रत क़ैस सत्तर अंसार के साथ बैअत उक़बा में शामिल हुए थे और जंग बद्र और उहद में शामिल होने का भी उन्हें सौभाग्य मिला।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 392 क़ैस बिन अबी सअसअः मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

जंग बदर के लिए रवाना होते हुए नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने लश्कर के साथ मदीना से बाहर ब्यूतुस्सुकिया के पास ठहरे और कम उम्र बच्चे जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की साथ जाने के शौक में साथ चले आए थे वहाँ से वापस किए गए। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा से इर्शाद फरमाया कि वह सुकिया के कुंए से पानी लाऐं। आपने इस का पानी पिया और फिर सुकिया के घरों के पास नमाज़ अदा की। सुकिया से प्रस्थान के समय, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत क़ैस बिन अबी सअसअः को मुसलमानों को गिनने का आदेश दिया। इस अवसर पर आप ने उनको पानी पर निगरानी भी बनाया। उसके बाद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खुद अबी अनबा कुएं के निकट जो मस्जिद नबवी से लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर थी निवास किया। जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि गिनती करो कितने हैं हज़रत क़ैस ने गिनती करके आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सल्लल्लाहो से निवेदन किया कि उनकी संख्या 313 है। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और कहा कि तालूत के साथियों की संख्या भी इतनी ही थी। सुकिया के बारे में यह नोट लिखा है, कि मस्जिद-ए-नबी से इस की दूरी दो किलोमीटर के क़रीब थी और इसका पुराना नाम हुसीकः था। हज़रत ख़लाद वर्णन करते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुसीकः का नाम बदल कर सुकिया रखा था। वह कहते हैं कि मेरे दिल में यह इच्छा पैदा हुई कि मैं सुकिया को खरीद लूं लेकिन मुझ से पहले ही हज़रत साद बिन अबी वक़ास ने उसे अपने दो ऊंटों के बदले में खरीद लिया और कुछ के अनुसार सात औकिया अर्थात दो सौ अस्सी दिरहम के बदले खरीदा गया। जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस बात का ज़िक्र किया गया तो आप ने फरमाया कि सौदा बहुत फायदेमंद है।

(अस्सीरुतल नबविय्या अला ज़ौइल कुलआन लेखक मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन सोलेम जिल्द 2 पृष्ठ 124 मकतबा अश्शामला), (सबलु हुदा वर्रशिाद जिल्द 4 पृष्ठ 23, 25 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1993), (यौमुल फुरकान इसरार जंग बद्र डाक्टर मुस्तफा हसन अलबदवी पृष्ठ 124 मुद्रित प्रकाशन अलमिनहाज बैरूत 2015), (इमताअल असमा जिल्द 8 पृष्ठ 341 दारुल कुतुब अल्इमिया बैरूत 1999 ई), (किताबुल मगाज़ी लिल वाकदी पृष्ठ 37-38 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2013)

इसी तरह, बदर के दिन, आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने साक़ा की कमान आप के ज़िम्मे सौंपी थी। साक़ा का लश्कर वह लश्क़र होता है जो जंग में सुरक्षा की लिए पीछे चलता है। एक बार उन्होंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा की में निवेदन किया हे अल्लाह के रसूल! मैं कितनी देर में कुरआन को सम्पूर्ण पढ़ूं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि पंद्रह रातों में। हज़रत क़ैस ने जवाब दिया, मैं ख़ुद में इस से अधिक का सामर्थय पाता हूं। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया "एक जुम्अः से लेकर अगले जुम्अः तक कर लिया करो। उन्होंने कहा कि मैं अपने आप में इस से अधिक का सामर्थ्य पाता हूं। फिर उन्होंने एक लंबे समय तक, कुरआन की तिलावत की यहां तक कि जब आप बूढ़े हो गए और आप आंखों पर पट्टी बांधने लगे, तो आप ने पंद्रह रातों में कुरआन का दौर पूर्ण करना शुरू किया। तब वह कहा करते थे कि काश मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की छुट्टी को स्वीकार कर लिया होता।

(असदुल ग़ाबह 4 पृष्ठ 408 क़ैस बिन अबी सअसअः प्रकाशन दारुल कुतुब (2003 ई (ताजुल उरूस)

हज़रत क़ैस के दो बच्चे अल फाकिहः और उम्मे हारिस थे। इन दोनों की माता इमाम बिन मुआज़ थीं। हज़रत क़ैस की नस्ल आगे नहीं बढ़ सकी। हज़रत क़ैस के तीन भाई थे, जिन्हें आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुहबत से लाभांवित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। लेकिन वे बद्र में शामिल नहीं थे। उन में से, हज़रत हारिस जंग यमामा में शहीद हुए और हज़रत अबूकलाबः और हज़रत जाबिर इब्न अबी सअसअः ने जंग मौतः में शहादत को पाया।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 392 कैस बिन अबी सअसअः प्रकाशन

दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

हज़रत उबैदह बिन हारिस एक सहाबी थे। हज़रत उबैदह बिन हारिस जो बनू मुतलिब से थे आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के करीबी रिश्तेदार थे (उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए पृष्ठ 123-124) उन का सम्बन्ध बनू मुतलब से था। उन का उपनाम उबू हारसा था तब कि कुछ के निकट अबू मुआविया था। माता का नाम सुहैला बिन्त ख़ज़ाई थी। हज़रत उबैद आयु में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दस वर्ष बड़े थे। यह शुरुआती ईमान लाने वालों में से थे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दारे अरकम में शामिल होने से पहले यह ईमान लाने वाले थे। हज़रत अबू उबैदह, हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुल्लाह असदी, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अरक़म मख़ज़ूमी और हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन एक ही समय में ईमान लाए थे। हज़रत उबैदह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकट विशेष सम्मान रखते थे। हज़रत उबैदह बिन हारिस ने आरम्भ में इस्लाम स्वीकार किया था। और बनू अबदे मुनाफ के सरदारों में से थे।

(असदुल ग़ाबाह, जिल्द 5, पृष्ठ 547, उबैदह बिन हारिस प्रकाशन दारुल कुतब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई) अल्असाब: फी तमीज़ स्सहाबा जिल्द 4 पृष्ठ 353 उबैदह बिन अल्हारिस प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इमिया बैरूत 1995 ई)

हज़रत उबैदह बिन हारिस ने अपने दो भाइयों हज़रत तुफैल बिन हारिस और हज़रत हुसैन बिन हारिस के साथ मदीना की तरफ हिजरत की। और उनके साथ हज़रत मिस्तह बिन उसासा थे। सफर से पहले तय पाया कि यह लोग नाजह वादी में एक साथ जमा होंगे। परन्तु हज़रत मिस्ताह बिन उसासा पीछे रह गए। क्योंकि उन को सांप ने काट लिया था। अगले दिन उन को सांप के काटे जाने की सूचना मिली। अत: यह लोग वापस गए और उन को लेकर मदीना गए। मदीना में ये लोग हज़रत अब्दुर्रहमान बिन सलमाह के यहां रुके थे।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 37 उबैदह बिन हारिस मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उबैदह बिन हारिस और हज़रत उमैर बिन अलहुमाम के बीच एक भाईचारा स्थापित किया था। हज़रत उबैदह बिन हारिस और हज़रत उमैर बिन अलहुमाम दोनों जंग बद्र में शहीद हुए थे।

(अल्इस्तियाब जिल्द 3 पृष्ठ 1214 उमैर बिन अल-हुमैम, प्रकाशन दारुल जबल 1992 ई)

उनके दो भाई, हज़रत तुफैल बिन हारिस और हज़रत हुसैन बिन हारिस ने भी जंग बदर में आप के साथ शामिल थे।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 38-9 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना आकर कुफ़्फ़ार की बुराई से बचने के लिए और मुसलमानों को सुरक्षित रखने के लिए कुछ बातें दारण कीं जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उच्च राजनीतिक योग्यता और जंगी मुकाबला की दरदर्शिता का एक स्पष्ट प्रमाण है। इसी का वर्णन करते हुए सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए ने लिखा है:

इतिहास से सिद्ध है कि पहला दस्ता ही जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उबैदा बिन अल्हारिस: की सरदारी में रवाना किया था और जिस का अकरम: बिन अबूजहल के गिरोह से सामना हो गया था उसमें मक्का दो कमज़ोर मुसलमान जो कुरैश के साथ मिलाए गए थे, क़ुरैश को छोड़ मुसलमानों में आ मिले थे इसलिए रिवायत में आता है कि ... "इस अभियान में जब मुसलमानों की पार्टी लश्करे कुरैश के सामने आई तो दो व्यक्ति मकदाद बिन अमरो और उतबा बिन ज़हरह जो बनू ज़हरा और बनो नोफल के सहयोगी थे मुशरिकीन से भागकर मुसलमानों में आ मिले और यह दोनों व्यक्ति मुसलमान थे और केवल काफिरों की आड़ लेकर मुसलमानों में आ मिलने के लिए निकले थे।" अत: इन जमाअतों को भिजवाने में एक उद्देश्य आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह भी था कि ताकि इस प्रकार के लोगों को ज़ालिम कुरैश से नजात मिल जाए और मुसलमानों में आ मिलने का मौका मिलता रहे।"

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए पृष्ठ 324)

हिजरत के आठ महीने के बाद, आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उबैद: बिन हारिस को साठ या अस्सी सवारों के साथ भेजा। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उबैद: बिन हारिस: के लिए एक सफेद रंग का परचम बांधा जिसे मतह बिन असासा ने उठाया। इस सिरया का उद्देश्य यह था कि जो लश्कर भेजा गया है या सवारों का एक ग्रुप कि कुरैश के एक व्यापारिक काफिला को रास्ता में रोक लिया जाए। कुरैश के काफिला का अमीर अबू सुफियान था। कुछ के अनुसार अकरमा बिन अबू जहल और कुछ के अनुसार मिकरज़ बिन हफ्स है। इस काफिला में दो सौ आदमी थे, अर्थात काफिरों के काफिला में जो व्यापारिक माल लेकर जा रहे थे। सहाबा की इस जमाअत ने राबिग़ वादी में इस काफिला को जा लिया। इस स्थान को वद्दान भी कहा जाता है। दोनों पक्षों के बीच तीर अंदाज़ी के अतिरिक्ति कोई मुकाबला न हुआ। और लड़ाई की नियमित सफ बंदी न हुई। सह सहाबी जिन्होंने मुसलमानों के लिए पहला तीर चलाया वह हज़रत सअद बिन वक़ास थे। और यह वह पहला तीर था जो इस्लाम के लिए चलाया गया था। इस अवसर पर हज़रत मकदाद बिन असवद और हज़रत इयाना बिन गज़वान (इब्ने खशाम और तारीख़ तबरी में उतबा बिन गज़ावान भी है।) लिखा है मूर्तिपूजकों की जमाअत से निकल कर मुसलमानों से आ मिले क्योंकि इन दोनों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया था और वह मुसलमानों में जाना चाहते थे। हज़रत उबैदह बिन हारिस: के के नेतृत्व में यह इस्लाम की दूसरी जंग थी। तीर चलाने के बाद दोनों पक्ष पीछे हट गए क्योंकि मुसलमान के बहुदेववादियों पर इतना रौब पड़ा कि उन्हें लगा कि मुसलमानों की एक विशाल सेना है जो उन की सहायता के लिए पहुंच रही है। अत: वे लोग जो डर कर पीछे हट गए और मुसलमानों ने उन का पीछा न किया।

(अस्सीरतुल हलबिया जिल्द 3,पृष्ठ 215-216, सिरया उबैदह बिन हारिसा: प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2002ई) (सीरत इब्न हश्शाम जिल्द 2 592 सिरया उबैदह: बिन हारिस प्रकाशक मुस्तफा अल्बाबी मिस्र 1955 ई) तारीख़ तिबरी जिल्द 2 पृष्ठ 12 सन 1 हिज्री प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1987 ई)

गए तो थे परन्तु यह नहीं कि कोई पीछे गए थे। और नियमित जंग थी। दोनों तरफ से हमला हुआ उन्होंने भी हमला किया, इन्होंने भी तीर चलाए और उन्होंने भी तीर चलाए और आख़िर में जब कुफ्फार पीछे हट गए तो मुसलमान लौट आए।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने सीरत की किताब में लिखा है:

" जंग वद्दान से वापस आने पर रबीउल अव्वल महीने के शुरू में आप ने अपने एक करीबी रिश्तेदार उबैदा बिन हारिस मुतलबी के नेतृत्व में साठ सवार मुहाजरीन का एक दस्ता रवाना किया। इस अभियान का उद्देश्य भी कुरैश मक्का के हमलों की रोकथाम थी।" उद्देश्य वर्णन कर दिया है कि मक्का के कुरैश के हमलों को रोकना था। अत: जब उबैदह: बिन हारिस और आप के साथी कुछ दूरी तय कर के सनियय्यतुल मर्रह के पाश पहुंचें तो अचानक क्या देखते हैं कि कुरैश के पांच सौ हमला करने वाले अकरम: बिन उबू जहल की कमान में डेरा डाले पड़े हैं। दोनों पक्षों एक दूसरे के सामने हुए और एक दूसरे के मुकाबला में कुछ तीरंदाज़ी भी हुई लेकिन फिर मुशरकीन का समूह यह भय कर कि मुसलमानों की पीछे कुछ और फौज़ छुपी होगी।" कुछ और हो सकता है, लोग आ रहे हों, कोई लश्कर हो। "उन के मुकाबला से पीछे हट गए और मुसलमानों ने उनका पीछा नहीं किया। अलबत्ता मुशरिकीन की सेना में दो व्यक्ति मकदाद बिन अमर और उतबा बिन गज़वान अकरम: बिन अबूजहल के सेना से अपने आप भाग कर मुसलमानों के साथ आ मिले और लिखा है कि वह इसी उद्देश्य से कुरैश के साथ निकले थे कि मौका पाकर मुसलमानों में आ मिलें क्योंकि वह दिल से मुसलमान थे लेकिन अपनी कमज़ोरी के कारण क़ुरैश से डरते हुए हिजरत नहीं कर सकते थे और संभव है कि इसी घटना ने क़ुरैश को बद-दिल कर दिया हो और उन्होंने इसे बुरी सोचना समझकर पीछे हट जाने का फैसला कर लिया हो। इतिहास में यह उल्लेख नहीं है कि कुरैश का यह लश्कर , जो निश्चित रूप से एक वाणिज्यिक काफला नहीं था।" व्यापार की आड़ में, ये लोग एक नियमित सेना के साथ बाहर निकले थे, सशस्त्र थे। " और जिसके बारे में इब्ने इस्हाक़ ने महान लश्कर (यानी एक बड़ा लश्कर) के शब्द प्रयोग किए हैं किसी खास इरादे से इस तरफ आया था, लेकिन यह निश्चित है कि उनकी नीयत ठीक नहीं थी।" अच्छा इरादा बहरहाल वह नहीं आए, हमला करने आए और इसलिए पुरातत्वविदों ने भी व्यवस्था की। और निश्चित रूप से ऐसा लगता है कि पहली तार अदाज़ी भी काफिरों की तरफ से हुई थी।" और यह ख़ुदा तआला की कृपा थी कि उन्होंने मुसलमानों को चौकस पाकर अपने आदमियों में से कुछ को मुसलमानों की तरफ जाता देख कर उन की

हिम्मत नहीं हुई और वे वापस लौट गए। सहाबा कराम को इस अभियान का लाभ यह हुआ कि दो मुलमान रूहें कुरैश की क्रूरता से आज़ाद हो गईं।

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 328-329)

आप रज़ि अल्लाह तआला अन्हों ने जंग बदर के अवसर पर मुसलमानों ती तरफ से वलीद बिन उत्बा के साथ मुकाबला किया। हदीसों में आता है कि कुरआन मजीद की एक आयत भी इस घटना के बारे में अवतरित हुई कि अत: हज़रत अली रज़ि अल्लाह तआला से रिवायत है कि

هٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوْا فِيْ رَبِّهِمْ

(सूरत अल्हज्ज 20) उन लोगों के बारे में थी जिन्होंने बद्र वाले दिन मुबारज़त (आमने सामने का मुकाबला करना) की अर्थात हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब, हज़रत अली बिन अबी तालिब और हज़रत उबैदा बिन हारिस और उतबा बिन रबीया, शैब: बिन रबिया और वलीद बिन उतब:।

(अल मुस्तदरक अला सहीहैन जिल्द 2 पृष्ठ 419 किताबुल तफसीर सूरत हज्ज हदीस 3456 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2002 ई)

आयत का अर्थ है कि ये दो झगड़ा करने वाले हैं जिन्होंने अपने रब्ब के बारे में झगड़ा किया पूरी आयत इस तरह है

هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِيْ رَبِّهِمْ ۖ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ۖ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ

(सूरत अल्हज्ज 20)

ये दो झगड़ालू हैं जिन्होंने अपने रब्ब के बारे में झगड़ा किया। अत: वे लोग जिन्होंने इन्कार किया क्या उन के लिए आग के कपड़े काटे जाएंगे। उनके सिरों के ऊपर से गर्म पानी डाला जाएगा।

बहरहाल इस मुकाबला का अधिक विस्तार सुनन अबू दाऊद में इस तरह बयान किया है कि हज़रत अली से रिवायत है कि उतबा बिन रबिया और उसके पीछे उसका बेटा और भाई भी निकले और पुकार कर कहा कि कौन हमारे मुकाबला के लिए आता है? इतने में अंसार के युवाओं ने जवाब दिया। उतबा ने कहा, तुम कौन हो? उन्होंने कहा कि हम अंसार हैं। उतबा ने कहा कि हमें आपसे कुछ नहीं लेना है। हम अपने चाचा के बेटों से ही लड़ने का इरादा रखते हैं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, हे हमजा ! हे अली! खड़े हो जाओ। हे उत्बा बिन हारिस ! आगे बढ़ो हज़रत अली बताते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आवाज सुनते ही हज़रत हमज़ा उतबा की तरफ बढ़े और मैं शीबह की तरफ बढ़ा और उबैदा बिन हारिस और वलीद के बीच झड़प हुई और दोनों ने एक दूसरे को बहुत घायल कर दिया। फिर हम वलीद की तरफ आकर्षित हुए और उसे मार दिया और उबैदह को हम मैदान जंग से उठा कर ले आए।

(सुन्नत अबू दाऊद किताबुल जिहाद फी मुबाज़रत हदीस 2665)

मुबारज़त के दौरान, उतबा ने हज़रत उबैदह बिन हारिस की पिंडली पर बहुत गहरा घाव लगाया। जिस से उन की पिंडली कट गई थी। फिर आप को आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उठवाया और जंगे बद्र की समाप्ति के बाद सफरा स्थान पर जो बद्र के पास एक स्थान है वहाँ आप का निधन हो गया और वहीं उन्हें दफन कर दिया गया।

(अल मुस्तदरक अला सहीहैन जिल्द 3 पृष्ठ 207-208 किताब मअरफते सहाबा मिन मनाक़िब उबैदा बिन हारिस हदीस 4862 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2002) (हदीस का शब्दकोश किताब " स " पृष्ठ 67 मुद्रित मीर मोहम्मद पुस्तकालय आराम बाग़ कराची)

एक रिवायत के अनुसार, जब उबैदह की पिंडली काटी जा चुकी थी और उस से मग़ज़ बह रहा था। तब सहाबा हज़रत उबैदा को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास लाए तो उन्होंने अर्ज़ किया कि हे रसूलल्लाह! क्या मैं शहीद नहीं हुआ? जंग में घायल हो गए थे। उस समय तुरंत शहीद नहीं हुए थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, "क्यों नहीं, तुम शहीद हो। एक रिवायत के अनुसार जब हज़रत उबैदा बिन हारिस को आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में लाया गया तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सल्लल्लाहो ने अपने ज़ानों पर उनका सिर रखा फिर हज़रत उबैदा ने कहा काश अबू तालिब आज जीवित होते तो वह जान लेते जो वह प्राय: कहा करते थे कि

وَنُسْلِمُهُ حَتّٰى نُصْرَعَ حَوْلَهُ
وَنَذْهَلَ عَنْ اَبْنَاءِنَا وَالْحَلَائِلِ

कि यह झूठ है जो हम मुहम्मद को तुम्हारे हवाले कर दें। यह तभी संभव है कि जब हम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आसपास से पछाड़ दिए जाएं और हम अपने बीवी बच्चों से भी अज्ञान हो जाएं। ये भावनाएँ थीं उन लोगों कीं। शहादत के समय हज़रत उबैदह बिन हारिस की आयु 63 वर्ष की थी।

(अल मुस्तदरक अला सहीहैन जिल्द 3 पृष्ठ 208 किताब मअरफतुस्सहाबा मिन मनाकिब उबैदह बिन हारस: हदीस 4863 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2002) (असदुल ग़ाबह जिल्द 3, पृष्ठ 547 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई)

इनके कुछ सहाबा का उल्लेख करने के बाद अब मैं एक हमारे इंडोनेशिया के एक पुराने सेवक, वाक्फे ज़िन्दगी, मुबल्लिग़ सिलसिला का उल्लेख करना चाहता हूं जिनकी पिछले दिनों वफात हुई। उसका नाम था सैय्यत अहमद अज़ीज़ साहिब। 19 नवंबर को उन की वफात हुई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। सियूती साहिब दिल की बड़ी बीमारी में पीड़ित थे और उपचार के लिए उन्हें रबवा भिजवाया गया था जहां ताहिर हार्ट इंस्टीट्यूट रबवा में उनकी एक बड़ी मेजर (major) सर्जरी हुई और कुछ दिन बाद 19 नवम्बर को वह स्वस्थ नहीं हो सके और वफात पा गए। पीछे रहने वालों में उनकी पत्नी, चार बेटे बेटियां और दस पोते, नवासे सवासियां हैं। इनमें से छह बच्चे वक्फे नौ में शामिल हैं।

सियूती अज़ीज़ अहमद साहिब का जन्म 17 अगस्त 1944 ई को बोने (Bone) साउथ सुलावेसी (South Sulawesi) में हुआ था। उन्होंने सितंबर 1966 ई से लेकर अक्टूबर 1971 ई तक जामिया अहमदिया में पढ़ाई की। उनकी नियुक्ति अप्रैल 1972 ई को मुख्य प्रचारक इंडोनेशिया के रूप में हुई थी। 1985 ई में उनके प्रदर्शन और कार्यक्षेत्र को देखने के बाद, उन्होंने शाहिद की उपाधि भी मिली। 2000 ई में, उन्हें हज बैतुल्लाह का सम्मान प्राप्त हुआ। 1972 ई से 1979 ई तक, सात वर्ष दक्षिण सुमात्रा (South Sumatra) सेवा, लम्पुंग, (Lampung) जंबी (Jambi) और बंगकुलु (Bengkulu) के मुबल्लिग़ के रूप में सेवा की। 1979 ई से 1981 ई तक, मुअल्लिम कक्षा में एक शिक्षक के रूप में कार्य किया। 1981 ई में, Purwokerto में एक मुबल्लिग़ बिन गए। फिर 1982 ई में, शिक्षक और मुबल्लिग़ों के स्कूल में उप-अधिकारी के रूप में। 1982 ई से 1992 ई तक, जामिया अहमदिया इंडोनेशिया के प्रिंसिपल थे। इस दौरान उन्हें 1985 ई में शाहिद की डिग्री मिली थी। 1992 ई से 2016 ई तक बीस साल तक रईसुत्तबलीग़ के रूप में काम किया। 2016 से वफात तक प्रिंसिपल जामिया अहमदिया इंडोनेशिया में के रूप में सेवा की।

1973 ई में उनकी शादी मुबल्लिग़ सिलसिला अब्दुल वाहिद साहिब की सुमात्री की बेटी के साथ हुई थी, जो कि मौलाना अब्दुल बासित साहिब अमीर जमाअत इंडोनेशिया की बड़ी बहन थी। उनके चार बच्चे हैं मर्दिया ख़ालिद, , हारिस अब्दुल बारी, सआदत अहमद और अलीत: अतिया अलीम हैं। अफीफा साहिबा की 2009 ई वफात हुई। उसके बाद, सियूती साहिब ने अरिना दमयन्ती साहिबा से शादी कर ली। उनसे कोई संतान नहीं है। उन्होंने एक बार अपने परिवार में अहमदियत के आरम्भ के बारे में एम.टी.ए का साक्षात्कार किया, जिसमें उन्होंने बताया था कि मेरे और मेरे परिवार की बैअत का सबसे बड़ा कारण यह था कि मेरे दादा ने यह वसीयत की थी कि आख़री जमाना में इमाम महदी आएगा। और जब वे आए तो तुम सब उस को स्वीकार कर लेना, इस वसीयत को पूरा करने के लिए हमारे परिवार ने दो बार हिजरत की। 1959 ई में हमारा परिवार लम्पसंग की तरफ हिजरत कर गया और 1963 ई में एक मुबल्लिग़ मौलाना ज़ैनी ढालन साहिब लम्पसंग में प्रचार करने आया और हम उनसे मिले। उन्होंने कहा कि इमाम मेहदी आ गया है। फिर मैंने उनसे पूछा कि इमाम मेहदी के आने का क्या प्रमाण है? उन्होंने हमें एक किताब 'अल-मसीहुल आख़रज़ुम्मान के सत्या हमें दी और हमें इस पुस्तक का अध्ययन करने के लिए कहा। जब मैंने इस पुस्तक का अध्ययन करने के लिए कहा। तो कहते हैं, कि जब मैंने इस किताब को पढ़ातो मुझे विश्वास हो गया कि जो इमाम महदी आने वाला था वह इमाम महदी आ गए हैं और वह इमाम महदी हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी हैं। अत: कहते हैं कि 13 फरवरी 1963 ई को 19 वर्ष की उम्र में, मैं और मेरे परिवार के चौंतीस लोगों ने मौलाना ज़ैनई ढलान के माध्यम से बैअत की।

फिर यह और कहते हैं कि 1963 ई में रब्वा से वकीलुत्तबशीर साहिब बांडुंग आए। उस समय मैं भी वहीं था। जमाअत के कार्यक्रमों को देखने और प्रचारकों से मिलने पर मुझे जमाअत की सच्चाई स्पष्ट रूप से दिखाई दी। फिर जामिया में

प्रवेश करने के बारे में, 1963 ई में, मौलाना अबू बक्र, अयूब साहिब, जो उस समय दक्षिण सुमात्रा के प्रचारक थे, नौ मुबाईन की तरबियत के लिए लैम्पोंग आए। इस यात्रा के बाद, उन्होंने मौलाना सैयद शाह मुहम्मद जेलानी को रिपार्ट लिखी कि लम्पुंग के बुगियों के कुछ लोगों ने बैअत की है और इस समय तक इस क़ौम का कोई मुबल्लिग़ नहीं हैं जब कि जावा) और सनदा क़ौम के मुबल्लिग़ हैं। और उन्होंने लिखा कि मैंने तीन युवाओं को देखा है जिन्हें रब्वा में स्कूल भेजा जा सकता है। कहते हैं कि तीन में से एक नौजवान में था। तो कहते हैं कि हमें तीनों को जामिया रब्बा में भिजवाने की सिफारिश की गई। हमें पासपोर्ट बनवाने के लिए कहा गया था लेकिन उस समय इंडोनेशिया में राजनीतिक हालात अच्छे नहीं थे, पासपोर्ट नहीं बन सका। फिर 1966 ई में, मौलाना इमामुद्दीन साहिब के साथ पाकिस्तानी दूतावास में आवेदन किया और 15 मिनट के भीतर वीजा प्राप्त कर लिया। फिर कराची पहुंचे। वह कहते हैं कि कराची एक रात रहा। वहां से ट्रेन के माध्यम से रब्वा पहुंचा और फिर वहां से मैं स्टेशन से पैदल जामिया पहुंच गया।

कहते हैं कि जामिया के कई छात्रों ने मेरा स्वागत किया। एक नया माहौल था और शुरुआत में बहुत मुश्किल हुई, लेकिन फिर आदत पड़ गई। तीन दिन बाद कहते हैं कि मुझे जामिया में प्रवेश मिल गया। शिक्षकों में से एक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के सहाबी मास्टर अता मुहम्मद साहिब थे। कहते हैं कि रब्वा में रहने के दौरान, मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कई सहाबा से मुलाकात की और हमेशा किसी सहाबी से मिलने का अवसर ढूंढता था और फिर उन से बातें करते हुए उन के पैर दबाया करता था। हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस से एक अच्छी मुलाकात का वर्णन करते हुए कहता हैं कि जब हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़लीफा बने और मैं ने हुज़ूर से पहली मुलाकात की तो हुज़ूर ने गले लगाया हुज़ूर ने हमारा गाल पर अक थपकी देते हुए फरमाया कि यह इंडोनेशिया से आए हैं। तुम सब दूर से यहां आए हो (जितने विदेशी बच्चे हैं) और तुम मेरे बच्चे हो। कहते हैं कि हज़रत ख़लीफतुल मसीह का नूरानी नूर हमेशा मेरे साथ रहा जिस के कारण से हमारी सभी कठिनाइयां आसान हो गईं। हज़रत ख़लीफतुल मसीह ने जो कहा था कि अगर कोई मुशकिल आए तो मेरे पास आना। कहते हैं, जब मैं इंडोनेशिया वापस जाने लगा, तो लौटने से पहले मैं हुज़ूर से मिलने गया था। तो हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस ने फरमाया कि आप को क्या चाहिए मैंने कहा मुझे कुछ किताबें चाहिए। मैं एक दफ्तर गया लेकिन मुझे नहीं मिली। हज़रत ख़लीफतुल मसीह ने अपनी क़लम से एक नोट लिखा कि सियूती को किताबें दे दें। इस के बाद कहते हैं कि मुझे रूहानी ख़जायन का सेट मिल गया जो अब तक मेरे पास है और जाने से पहले हुज़ूर ने बहुत देर तक मुझे अपने गले से लगाया और मेरे कान में फरमाया अपने आक़ा से बेवफाई मत करना। यह मेरी नसीहत है।

एक घटना लिखी है कि 1993 ई में अमीर साहिब, इंडोनेशिया लोबिस साहिब ने आलमी बैअत के प्रोग्राम को सफल बनाने के लिए मुझे फिलीपींस भेजा और कहा कि यह ख़लीफतुल मसीह राबे का आदेश है कहते हैं मैं तो बहुत कमज़ोर हों। मुझे भाषा भी नहीं आती। उन्होंने कहा कि मुझे आप पर पूरा भरोसा है। कहते हैं कि यह आप का आपका आदेश है तो मैं तैय्यार हूं। इसलिए मैं जमाअत के केंद्र से चलागया और वहां पहुंचने के लिए मनीला और ज़ाम्बोआंगा (ज़ाम्बोआंगा) शहर से गुज़रना पड़ता है। कहते हैं मैंने खाना खाया, मुझे बहुत सख्त पेट में तकलीफ हो गई। बड़ी कमज़ोरी हो गई। इस अवस्था में मैंने अल्लाह तआला से दुआ कि की हे अल्लाह अगर इस अवस्था में मैं यहां मर जाऊं तो यहां तो कोई मुसलमान भी नहीं है जो मेरी नमाज़ जनाज़ा पढ़ेगा। कहते हैं कि मैंने रात को ख़वाब में देखा कि एक नर्स यूनीफार्म पहने हुए मेरे पास आई है और मेरे सिर पर अपना हाथ फेरते हुए फूंका। उस समय मुझे लगा कि मेरा शरीर ठंडा हो गया है और मेरे पैरों की उंगिलयों से ठंडक निकली है। कहते हैं सुब्ह जब मैं उठा तो ठीक था। इसलिए मैं तावी-तावी की ओर प्रस्थान किया और अल्लाह तआला की कृपा के तीन महीने के अन्दर 130 आदमी बैअत कर के जमाअत में शामिल हो गए।

अब्दुल बासित साहिब अमीर जमाअत इंडोनेशिया के लिखते हैं कि सियूती अज़ीज़ साहिब को बहुत ही बारीकी से बेहनोई और मुबल्लिग़ के रूप में देखा और उन्हें अच्छी तरह से देखने का मौका मिला। वह बहुत ही सरल व्यक्ति था। विनम्रता और एकीकरण का उच्च स्तर था। हर अवस्था में धैर्य का उदाहरण थे। दुआ, अनुकंपा, अल्लाह तआला पर बहुत अधिक भरोसा था। उनके ख़िलाफत के निज़ाम और सिलसिला के ख़लीफाओं से हुत प्यार तथा मुहब्बत थी। जमाअत के कामों को अपने कामों पर प्राथमिकता देते थे। जो भी ज़िम्मेदारी, काम तथा उहदा आप को दिया जाता बड़े प्यार तथा वफा के साथ निभाते। चाहे वे मुबल्लिग़ के रूप में हों या विश्वविद्यालय के शिक्षक के रूप में या एक प्राचार्य के रूप में या एक रईसुसत्तब्लीग़ के रूप में एक वक्फे ज़िन्दगी के रूप में एक महान नमूना तथा उदाहरण थे।

मासूम, जो इंडोनेशिया विश्वविद्यालय के वाइस प्रिंसिपल हैं, उन का कहना है कि सियूती साहिब दर्जा खामसाह, राबिया और सालसा को कुरआन का अनुवाद पढ़ाया करते थे। दर्जा मुबश्शर में कलाम पढ़ाया करते थे और पढ़ाने के लिए उन्होंने किताब इर्फाने इलाही का इंडोनेशिया की भाषा में अनुवाद किया था। जब बीमारी के कारण उनका स्वास्थ्य कमज़ोर हो गया था और चलना फिरना मुश्किल हो गया था, तब आप से छात्र उनके कार्यालय में पढ़ने आते थे। और रब्वा जाने से पहले ही, उन्होंने 8 नवंबर को आखरी क्लास ली। हमेशा यह कहा करते थे कि जामिया को अब शाहिद तक बढ़ा दिया गया है और ख़लीफतुल मसीह ने इसे मंजूरी दे दी है, इसलिए आपको ख़लीफतुल मसीह की इच्छाओं को पूरा करना है और कड़ी मेहनत करनी है।

उनकी एक बेटी मरदिया साहिबा लिखती है कि पिता जी ने अपना जीवन पूरी तरह से समर्पित कर दिया था। अपना सारा जीवन जमाअत के कामों में यहां तक कि हम यात्रा के लिए बहुत कम कहीं गए थे। लेकिन हम जानते थे कि वक्फे ज़िन्दगी की यही ज़िन्दगी है, यही उन्होंने अपने बच्चों को बताया कि वक्फे ज़िन्दगी का सारा समय जमाअत के लिए है फिर यह कहती हैं कि पिता जी का प्रशिक्षण करने में यह नियम था कि अधिक नसीहत नहीं किया करते थे बल्कि अपने कार्यों से व्यावहारिक नसीहत का प्रदर्शन किया। फिर यह कहती हैं कि जब मेरी माता बीमार हुईं, तो उन्होंने धैर्य से उन की सेवा की और घर का काम ख़ुद करते थे। रमज़ान के दिनों में, सहरी तथा इफ्तारी की तैय्यारी भी स्वयं किया करते थे और कभी किसी से नहीं कहते थे कि मेरे लिए अमुक काम कर दो। और काम अपने हाथ से करने की आदत थी।

उनके बेटे सआदत अहमद साहिब लिखते हैं कि हमारी तालीम बहुत धैर्य से करते थे, लेकिन नमाज़ के मामले में आप बहुत ताकीद करते थे। जब बचपन में नमाज़ का समय होता था, तो हमें मस्जिद में जाकर जमाअत के साथ नमाज़ अदा करने की नसीहत करते थे और अगर मैं मस्जिद में नहीं होता तो मुझे ढूंढते और फिर मुझे मस्जिद ले जाते। कहते हैं हमेशा यह कहा करते थे कि कभी नमाज़ न छोड़ना। नमाज़ के साथ सुन्नत भी पढ़ना और हमेशा कुरआन करीम की तिलावत करते रहना।

उनकी बेटी अतयतुल अलीम साहिबा कहती हैं कि पिता जा हमेशा सच कहा बोला करते थे और अपने बच्चों से कभी झूठ नहीं बोलते थे, भले ही मज़ाक़ में क्यों न हो। तहज्जुद कभी नहीं छोड़ते थे। हमेशा मस्जिद में जाकर जमाअत के साथ नमाज़ अदा करते थे। बीमारी के अलावा मैंने उन्हें घर पर कभी फर्ज़ नमाज़ अदा करने हुए नहीं देखा।

उनकी दूसरी पत्नी का कहना है कि उन्होंने रब्वा जाने से पहले मुझे और बच्चों को बताया कि मेरा परिवार, मेरे घर वाले और मेरे उत्तराधिकारी ख़िलाफत है और मेरा जीवन और मृत्यु जमाअत के लिए है। इस साल, जर्मनी के जलसा सालना पर भी बड़ी इच्छा से आए। बच्चों ने कहा भी कि बीमार हैं। उन्होंने कहा, मैंने समय के ख़लीफा से मिलना है। आए और आकर मिले भी और यह उनकी आख़री मुलाकात थी। वहां जर्मनी में मुझ से मिले थे। यह कहती हैं कि उत्कृष्ट पति थे। मैंने आज्ञा पालन का महत्व हमेशा आप से सीखा है। कभी भी जमाअत के कामों में अपनी

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

"इस्लाम वास्तविक मअरफत प्रदान करता है जिस से इन्सान के गुनाह के जीवन पर मृत्यु आ जाती है।"

(मल्फूज़ात भाग 3 पृष्ठ 181)

दुआ का अभिलाषी

धानू शेरपा, सेक्रेट्ररी अमूरे आमा,

जमाअत अहमदिया देव दमतांग

ज़िला नामची,सिक्कम

सेहत तथा स्वास्थ्य की परवाह नहीं करते थे।

सियूती अज़ीज़ साहिब के दामाद ज़की साहिब कहते हैं कि जब 2005 ई में यह ख़बर आई कि लोग हमारे केन्द्र पर हमला करने वाले हैं तो हमें केंद्र की सुरक्षा के लिए आने का आदेश दिया गया। कहते हैं कि मैं भी वहीं पर था। उस समय सियूती साहिब रईसुत्तब्लीग़ थे। मैंने देखा कि आप कभी डरते नहीं थे और बहादुरी से आधी-आधी रात को ख़ुद्दाम के पास जा-जाकर मिलते थे और कहते हैं कि मैंने उन में ख़िलाफत से बहुत अधिक मुहब्बत देखी। कहते थे कि मैं वक्फे ज़िन्दगी हूं और मैं जो भी करता हूं समय के ख़लीफा की मंज़ूरी से और उन के कहने पर करती हूं। 2017 में आप को स्ट्रोक हुआ था और थोड़ी समय बात नहीं कर पाए थे लेकिन फिर भी किताबों का अध्ययन करना जारी रखा और हमेशा यह कोशिश होती थी कि किसी तरह जामिया में जाकर बच्चों को पढ़ाऊं।

अहमद साहिब सैक्रेटरी तरबियत लिखते हैं कि अगर किसी से अच्छी सलाह मिलती तो उसे बहुत सम्मान के साथ धन्यवाद किया करते थे और जब भी किसी काम में कठिनाई हुई, तो उसने बड़ी ईमानदारी से परामर्श मांगते थे। अहमद नूर साहिब मुबल्लिग़ कहते हैं कि हमेशा बहुत सरलता से जीते थे लेकिन बहुत सम्मान वाले थे। बावजूद बड़ी आयु के जमाअत के कामों में वह हमेशा व्यस्त रहते थे मानो कि आप युवा ही थे। कहते हैं कि इन की एक नसीहत ख़ाकसार को हमेशा विनीत को याद रहती है वह यह है कि अल्लाह तआला के कभी मुंह न मोड़ना। अल्लाह तआला से मांगो वह अपने बन्दे की दुआ को कभी रद्द नहीं करता। कहते हैं कि शाहिद कक्षा के लिए साक्षात्कार हुआ था, तो आप ने रोते हुए और कांपते हुए विनीत से यह नसीहत की कि इस वक्फ को कभी मत छोड़ना। जो व्यक्ति इस वक्फ को छोड़ता है, वह बहुत हानि में होता है।

एक बयान करने वाले कहते हैं कि सियूती साहिब केंदारी पधारे तो उन्होंने नसीहत करते हुए कहा कि अगर मुरब्बी को जमाअत के निज़ाम की पाबन्दी करवाने में बाहरी तथा भीतरी समस्याओं का सामना हो, तो बिना भय के आगे बढ़ो और विश्वास करो कि अल्लाह तआला का समर्थन और सहायता आप के साथ है। लेकिन अगर व्यक्तिगत समस्याओं के कारण जमाअत की आपत्तियों का कारण हैं, तो इस के लिए समीक्षा करना और सुधार पैदा करना चाहिए। जमाअत के कामों में चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं। अल्लाह तआला पर भरोसा करो और नेक नीयत्त से काम करो। लेकिन अगर आपकी व्यक्तिगत समस्याएं हैं, तो समीक्षा करें। ख़ालिद अहमद ख़ान साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला लिखते हैं कि जामिया में पढ़ाई के दौरान सियूती साहिब रूहानी तथा नैतिक रूप से सियूती साहिब हमारे लिए एक उज्ज्वल उदाहरण थे। आप हमेशा समय पर बल्कि समय से पहले ही कई बार नमाज़ अदा करने के लिए मस्जिद में जाते थे। और आख़री दिनों तक बीमारी के बावजूद नमाज़ में हमेशा आगे रहे।

फिर मुबल्लिग़ सिलसिला हाशिम साहिब लिखते हैं कि जामिया में सियूती अज़ीज़ साहिब से इलमुल कलाम पढ़ने का सौभाग्य मिला थे। उनकी आदत थी कि पढ़ाने के समय छात्रों से सवाल तथा जवाब किया करते थे और छात्रों की तरफ से जवाबों के बहुत सराहते थे। एक बार उन्होंने हमसे पूछा कि जमाअत अहमदिया की सदाक़त की सब से बढ़ी दलील क्या है। कहते हैं कि मैंने एक एक कर के कुरआन मजीद के हवाले से जवाब देना शुरू किया। उन्होंने हमारे उत्तर सुने और कहा कि सच्चाई की सबसे बड़ी दलील मैं हूं अर्थात प्रत्येक अहमदी को अपने आप को सच्चाई की सब से बड़ी दलील समझनी चाहिए। फिर उन्होंने कहा कि तुम लोग अपने आप को इस योग्य बनाओ कि हम में से प्रत्येक इस जमाअत की सच्चाई का नमूना हो। यह उनके प्रशिक्षण का तरीका था कि यदि आप पूर्ण रूप से अहमदियत तथा पूर्ण इस्लाम का पालन करेंगे तो आप इस सिलसिला की सच्चाई की सब से बड़ी दलील बनेंगे। यह उनके प्रशिक्षण की शैली थी। ख़ुत्बे बहुत ध्यान से सुनते थे। और फिर मेरे ख़ुत्बे जो सुनते थे उन पर छात्रों से बातचीत करते थे, यह सुनिश्चित करते थे कि उन्होंने नोटिस लिए हैं और हमेशा यह देखते थे कि समय के ख़लीफ़ा के संदेश को समझा भी है या नहीं और हमेशा ख़िलाफत की इताअत के बारे में नसीहत करते थे ।

शमेसूरी महमूद साहिब लिखते हैं कि सियूती साहिब एक सफल वाक्फे ज़िन्दगी थे। एक बार जब उन्होंने खाकसार को सलाह करते हुए फरमाया कि वक्फ ज़िन्दगी करने के बाद अज्ञान नहीं रहना चाहिए। वक्फ से अलग होना अपने आप को जमाअत से अलग करना है। इस बात को हमेशा याद रखना चाहिए। फिर उन्होंने उस वाक्यांश को दोहराया जब आप यह कह रहे थे, उनकी आंखें लाल थीं, आंखों में आंसू थे।

यूसुफ इस्माईल साहिब मुबल्लिग़ लिखते हैं कि जब मुझे एक क्षेत्रीय मुबल्लिग़ बनाया गया, तो मैं आपसे मिलने गया था, सियूती साहिब रईसुत्तबलीग़ थे, तो यूसुफ साहिब ने उनसे पूछा कि उन्हें क्षेत्रीय मुबल्लिग़ क्यों नियुक्त किया गया क्योंकि मेरे अंदर कई कमज़ोरियां हैं। और कम अनुभवी हूं। मैं एक क्षेत्रीय मुबल्लिग़ के योग्य नहीं हूं। बड़े बड़े अनुभव वाले हैं उन को बनाएं। इस प्रश्न के उत्तर में आपने बहुत दृढ़ता और ईमानदारी से उत्तर दिया कि यह आप को किस ने बताया कि आप योग्य नहीं हैं इस लिए आप को एक क्षेत्रीय मुबल्लिग़ बनाया जा रहा है। आप को तो यह ज़िम्मेदारी इस लिए दी जा रही है ताकि आप सीख सकें, काम सीखें, ज़िम्मेदारी का इहसास पैदा हो। फिर कहने लगे हम तो कमज़ोर बन्दे हैं, हम कुछ नहीं कर सकते हैं, लेकिन अगर हमारा अल्लाह तआला के साथ एक मजबूत रिश्ता हो, तो हर मामले में आसानी पैदा हो जाएगी। बस यह हमेशा ध्यान में रखें कि आपका ईश्वर के साथ एक मजबूत रिश्ता हो, चाहे तुम एक क्षेत्रीय मुबल्लिग़ हो या सामान्य मुबल्लिग़ हो अल्लाह तआला से सम्बन्ध मज़बूत रखना है तभी आपको सफलता मिलेगी और इससे आसानी पैदा होगी।

एम.टी.ए के महाप्रबंधक हैं इख़ा नूर साहिब कहते हैं कि एक बार बहुत मुश्किल थी। मैंने आपको दुआ का संदेश भेजा। उस समय तो कोई जवाब नहीं दिया, फिर किसी से आप ने मेरा फोन नंबर मांगा। कहते हैं कि अगले दिन मेरी आप से मुलाकात हो गई तो आप ने पहला सवाल मुझ से यह किया कि तुम ने मुझ से दुआ के बारे में तो लिख दिया क्या अपनी परेशानी के लिए तुम ने समय के ख़लीफा को भी लिखा है? जब मैंने कहा कि दुआ के लिए लिखा है, तो बहुत ख़ुश हुए और कहा कि यही तरीका होना चाहिए और कहते हैं कि उस समय भी उस की आंखूं से आंसू बह रहे थे और आप के लिहजे से ख़िलाफत से गहरी मुहब्बत चमक रही थी।

इसी तरह विभिन्न अवसरों पर जब भी ख़िलाफत से सम्बन्ध का वर्णन होता जो आप बहुत अधिक भावुक हो जाया करते थे। मरहूम अल्लाह तआला के फज़ल से मूसी थे। रब्वा में वफात हुई उन का पर्थिव शरीर पाकिस्तान से 23 नवम्बर को इंडोनेशिया पहुंचा और 24 नवम्बर को पारुंग में मूसियों के मक़बरा में आप का दफनाया गया। जमाअत के लोगों के अधिकतर लोग जनाज़ा में शामिल हुए। अल्लाह तआला उनके स्तर बढ़ाए और उन्हें जन्नतुल फिरदौस में उच्च स्थान प्रदान करे। उन के सब रिश्तेदारों को धैर्य प्रदान करे और उन की औलाद तथा आने वाली पीढ़ियों को उनके नक्शेकदम पर चलने की तौफीक़ प्रदान करे।

(ख़ुत्बा सानिया के बाद हुज़ूर अनवर) ने फरमाया कि नमाज़ों के बाद मैं उनका नमाज़ जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा।

☆ ☆ ☆
☆ ☆

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पृष्ठ 2 का शेष

का विभाग हो या खाना खिलाने का विभाग हो, पार्किंग स्थल का विभाग है, सुरक्षा का विभाग है, यहां जलसा गाह के भीतर जो व्यवस्थाएं हैं, उनकी व्यवस्था के विभाग हैं, अन्य अलग-अलग श्रेणियां भी हैं, पुरुषों में भी, महिलाओं में भी योजना के आधार पर तो बहुत अच्छा है। लेकिन योजना उस समय काम करती है या लोगों की तसल्ली उस समय होती है जब काम करने वाले भी उत्तम रंग में अपने काम को कर रहे हों, और हमारे लिए सबसे अच्छी सुविधा प्रत्येक कार्यकर्ता और सेवा करने वाले में होनी चाहिए। वह यह है कि उस ने जब भी और जो भी काम करना है हंसते और मुस्कुराते चेहरे के साथ करना है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "मुझे आमतौर पर यहां से कई शिकायतें मिलती हैं। ब्रिटेन में, जलसे बड़े पैमाने पर होते हैं, शिकायतें आती हैं लेकिन कम हैं। यहां अधिक शिकायतें हैं, और विशेष रूप से महिलाओं की तरफ से कई शिकायतें हैं कि जो भोजन खिलाने के वाली लड़कियां हैं, इन के आचरण में विशेष रूप से बड़ी आयु की औरतों के साथ और बच्चों वाली औरतों के साथ उन के व्यवहार में सही नहीं होते। जो चाहे मेहमान कहे आप लोग जो कार्यकर्ता हैं जिन्होंने अपने आप को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा के लिए स्वेच्छा से पेश किया है आप का यह काम है कि हंसते मुस्कुराते चेहरे के साथ यह काम करें चाहे जो कोई बुरा भला आप लोगों को कहता रहे। अगर अब ये शिकायतें आईं सदर लजना भी नोट कर लें और उनकी नाज़मात भी नोट कर लें कि न नाज़मात से न काम करने वाली औरतों की तरफ से इस प्रकार की कोई शिकायत नहीं आनी चाहिए कि किसी ने किसी को बुरे आचरण से जवाब दिया, रूखेपन से जवाब दिया, मुस्कुराते हुए चेहरे के साथ जवाब नहीं दिया। इस प्रकार की जो भी शिकायतें होंगी, भविष्य में उस की कोई ड्यूटी न लगाएं। इसी प्रकार,काम करने वाले भी विशेष रूप से ध्यान रखें कि कोई शिकायत नहीं आनी चाहिए। विशेष रूप से जो विभाग हैं स्कियूरटी है कई बार गंभीरता धारण करनी पड़ती है, जांच करनी पड़ती है, लेकिन नैतिकता की सीमा में जांच करें और आपने आप को नैतिकता से गिरा न लें। इसी प्रकार से भोजन खिलाना का मामला है, पार्किंग है, यातायात नियंत्रण की बात है, प्रत्येक स्थान पर आप के आचरण अच्छे होने चाहिए और मुस्कुराते हुए चेहरों के साथ काम करना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अल्लाह तआला की कृपा से इस साल जो सामान्य रिपोर्ट मुझे आई हैं विभिन्न मेहमानों से भी और यू. के में रहने वालों से भी कि यू. के के जलसा सालाना में कार्यकर्ताओं ने और काम करने वाले मुस्कुराते हुए चेहरों के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करत रहे हैं, और यह जमाअत अहमदिया के प्रत्येक सदस्य की शान है। न केवल एक देश के काम करने वाला या कार्यकर्ता। यही कारण है कि ये जो आरोप कुछ सालों से जर्मनी के काम करने वालों पर लग रहा है और मुझे निरन्तर शिकायतें आ रही हैं, यह इस वर्ष न लगे कि किसी काम करने वाली लड़की या महिला ने या मर्द ने या लड़के ने किसी भी प्रकार का बुरा आचरण दिखाया या सहीह तरीके से जवाबा नहीं दिया या सहीह मार्दर्शन नहीं किया या शुष्क व्यवहार दिखाया है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के मेहमानों की सेवा करनी है, तो मुस्कुराते हुए चेहरों के साथ करें और यदि तबीयत के अनुसार ऐसा नहीं कर सकते हैं, तो ड्यूटी से क्षमा कर लें। अल्लाह तआला आपको उत्तम तरीके से सेवा करने की तौफीक़ प्रदान करे और आपको बेहतरीन रंग में सेवा करने की तौफीक़ मिले। अल्लाह तआला जलसा भी प्रत्येक तरह से बरकतों वाला करे और आप लोगों की ड्यूटियां भी इस प्रकार की हों कि प्रत्येक आप की प्रशंसा करने वाला हो और सब से बढ़ कर यह कि अल्लाह तआला की नज़र में हमारी सेवाएं स्वीकार हों। अब दुआ कर लें।

सम्बोधन के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। हुज़ूर अनवर का ख़िताब 8 बज कर 45 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद कार्यक्रम के अनुसार 9 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा कर के पढ़ाई

नमाज़ों के अदा करने के बाद अपने निवास स्थान की तरफ जाते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने प्रदर्शनी का निरीक्षण किया। इस प्रर्दशनी के एक हिस्से में इस्लाम और कुरआन को दिखाया गया था। इस्लाम के हवाले से विभिन्न 12 बैनर लगाए गए थे। इस्लाम का इतिहास फील (हाथी वालों) की घटना से आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफात तक टच स्क्रीन पर दिखाई गई। प्रदर्शनी में कुरआन के 57 अनूवाद रखे गए। इसके अलावा, जर्मन किताबों का एक स्टैंड था और एक स्टैंड फ्री जर्मन साहित्य का भी था। कुछ ऐतिहासिक दस्तावेज़ भी इस में रखे गए थे। रिव्यू आफ रिलीजंस और अल-क़लम परियोजना का भी प्रदर्शन भी था। जमाअत अहमदिया जर्मनी का इतिहास 1923 ई से 1960 ई तक भी प्रस्तुत किया गया था। इस प्रदर्शनी के निरीक्षण के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने आवासीय क्षेत्र में प्रवेश कर गए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला का निवास जलसा गाह के अन्दर एक रिहायशी स्थान पर था।

दिनांक 7 सितम्बर 2018 (दिनांक शुक्रवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह पांच बज कर पचास मिनट पर मर्दाना जलसा गाह में तशरीफ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने आवासीय भाग में पधारे। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ विभिन्न दफ्तर के कामों के देखते रहे।

आज अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत अहमदिया जर्मनी का 43 वां जलसा सालाना शुरू हो रहा था और आज जलसा सालाना का पहला दिन था। कार्यक्रम के अनुसार दोपहर एक बज कर 55 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने परचम फहराया। समारोह के लिए जलसा-गाह के चारों हॉल के बीच स्थित एक खुले लॉन में पधारे। हुज़ूर अनवर ने लिवाए अहमदियत को लहराया, जब कि अमीर साहिब ने जर्मनी के राष्ट्रीय ध्वज को लेहराया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई । इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला मर्दाना जलसागाह में पधारे। प्रचम लहराने का यह आयोजन भी दुनिया भर में सीधा प्रसारित किया गया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने जलसागाह में पधारे और ख़ुत्बा जुम्अ: प्रसारित किया। ख़ुत्बा जुम्अ: का पूरा पाठ अख़बार बदर में प्रकाशित हो चुका है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का यह ख़ुत्बा 3 बजे तक जारी रहा। यह ख़ुत्बा एम टी ए इंटरनेशनल पर लाइव प्रसारण किया गया था और निम्नलिखित सात भाषाओं में अनुवाद किया गया था। अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, अरबी, बांग्ला, इंडोनेशियाई, सोअहेली, इसके अलावा निम्नलिखित सात भाषाओं में भी हुज़ूर अनवर के ख़ुत्बा जुम्अ: का प्रबन्ध किया गया था। बोस्निया, स्पेनिश, बल्गेरियाई, फारसी, रूसी, तुर्की और अल्बेनियन। वे लोग जो इन भाषाओं को जानते थे, उन्होंने इन भाषाओं में सीधा ख़ुत्बा सुना। ख़ुत्बा जुम्अ: के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ जुम्अ: के साथ नमाज़ असर जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों के अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अपने निवास पर पधारे।

पवित्र हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का ख़ुत्बा जुम्अ: रेडियो एफ,एम 87. 9 पर लाइव प्रसारित हुआ। इस रेडियो की रेंज पांच किलोमीटर है। इस रेडियो द्वारा जलसा के सभी कार्यक्रम भी प्रसारित किए गए थे। इसके अलावा, दूसरी सुविधा ऐप की भी थी। जलसा सालाना का सीधा प्रसारण उर्दू और जर्मन भाषा में जलसा रेडियो ऐप में भी सुना गया था। तथा जिसके पास इंटरनेट की सुविधा नहीं इसके लिए इस एप्लिकेशन में यह सुविधा मौजूद है कि वह फोन के द्वारा नंबर मिलाकर जलसा का प्रसारण अपने फोन पर भी सुन सकता है।

जलसा सालना की प्रैस कवरेज

जलसा सालाना की कवरेज के लिए प्रैस भी एक बड़ी संख्या में जलसागाह में थे।

अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया

Reuters World समाचार एजेंसी, Epa-European press photo agency, समाचार एजेंसी Congo TV, TV Kanal 8 Kocani मैसी डोनीन टी वी चैनल, TV Malesnet मैसी डोनीन टीवी चैनल, TV Iris Stip मैसी डोनीन टीवी चैनल, TV Nova 12 Gevgelija मैसी डोनीन टीवी चैनल, Alislam. MK Macedonia, Kars Komentaras Lithuania, Israel Hayom Online, Ruptly World Online।

नेशनल मीडिया

Welt प्रिंट मीडिया, ZDF टी. वी चैनल, RTL टी वी चैनल, CURISMON प्रिंट मीडिया ऑनलाइन, Evangelischer Pressedients (EPD) समाचार एजेंसी DPA Karlsruhe Deutsche Welle (Samstag) रेडियो चैनल SWR National ARD टी, वी।

चैनल स्थानीय मीडिया

Badische Neuste Nachrichten, Baden TV, Online KA. News, SWR Horfunk (Studio Karlsruhe) टी, वी चैनल SWR Aktuell (Studio Karlsruhe) रेडियो चैनल Bayrischer Rundfunk (Montag) रेडियो चैनल

जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ जम्अ: की नमाज व अस्र पढ़ाने के बाद जलसा गाह से अपने निवास से वापस आ रहे थे तो हुज़ूर अनवर के निवास से बाहर प्रेस और मीडिया के प्रतिनिधि और पत्रकार हुज़ूर अनवर के आगमन के इंतजार में खड़े थे। इन सभी ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की तस्वीरें लीं और हुज़ूर अनवर के आगमन को रिकॉर्ड किया और अपनी कवरेज का हिस्सा बनाया।

सामूहिक मुलाकात

आज शाम सेनेगाल, ताज़किस्तान, लिथुआनिया और अफ्रीकी देशों से आने वाले प्रतिनिधियों और मेहमानों की सामूहिक मुलाकात का कार्यक्रम था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ 7:30 बजे मुलाकात हॉल में आए और सबसे पहले सिंगापुर देश से आने वाले एक परिवार ने मुलाकात की सआदत पाई और हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का श्रेय पाया।

बाद में सेनेगल से आने वाले प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य मिला। सेनेगल से जलसा जर्मनी में दो मेहमान आए, उनमें से एक अल्हाजी फालो सिल्ला थे। महोदय सेनेगल के एक बड़े शहर अमबोर के मेयर और सांप्रदाय मुरीद के ख़लीफा के प्रतिनिधि के रूप में आए थे। अन्य मेहमान मोर्टल साहिब थे। महोदय एक ग़ैर सरकारी संगठन के अध्यक्ष हैं और सदर महोदय सदर सेनेगल के साथी हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने परिचय प्राप्त करने के बाद फरमाया कि आप को जलसा सालाना कैसा लगा। इस पर अल्हाजी फालो सिल्ला साहिब ने निवेदन किया कि हमें जलसा बहुत अच्छा लगा। मैं जलसा में शामिल होकर बहुत ख़ुश हों। जलसा ने हमें बहुत प्रभावित किया। मैं ने हुज़ूर का ख़ुत्बा जुम्अ: सुना है और हुज़ूर के अनुकरण में नमाज़ अदा की है। हुज़ूर ने जो शांति और प्रेम का संदेश दिया है, हम उसे आगे पहुंचाऐंगे। इसी की आज दुनिया को ज़रूरत है। जलसा में इतनी बड़ी संख्या और अनुशासन को देखकर बहुत प्रभावित हुआ हूँ।

अल्हाजी फ़ॉलो सीला साहिब ने बताया कि हमने जमाअत को शहर के मध्य में 700 वर्ग मीटर भूमि मस्जिद निर्माण के लिए दी है। यह ज़मीन ख़लीफा मुरीद की स्वामित्व है उन्होंने जमाअत अहमदिया के साथ भाईचारा और ईमानदारी की अभिव्यक्ति के रूप में यह ज़मीन तोहफे के रूप में दी है।

इस पर हुज़ूर अनवर उसने कहा, "यह लगभग कनाल बनती है। महोदय ने इस पर कहा कि जमाअत अहमदिया इस पर अपनी मस्जिद बनाए। हम मस्जिद बनाने में भी मदद करेंगे। हुज़ूर अनवर ने कहा कि मस्जिद का निर्माण स्वयं ही किया जाएगा। आप केवल इतना कर दें कि मस्जिद के निर्माण में कोई बाधा न हो। यही उनकी मदद है। इस पर महोदय सीला साहिब ने कहा, "हम सभी एक साथ रहते हैं और हमारे शहर अमबोर में हुज़ूर अनवर के हर शुक्रवार लाइव प्रसारण किया जाता है, और हम सब ख़ुत्बा जुम्अ: सुनते हैं। हम ने अस्पताल के लिए एक जगह भी दी है।

अन्य मेहमान मोरताल साहिब ने निवेदन किया कि वह अस्पताल की अनुमति के संबंध में जमाअत की मदद कर रहे हैं। महोदय ने कहा कि एक अरबी स्कूल हुज़ूर अनवर के नाम पर खोलना चाहता है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया , "मेरे नाम पर खोलें, इस पर कोई नहीं है। ख़ुदा तआला करे सफल हो। ख़ुदा तआला आपको अधिक से अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करे।

महोदय ने कहा, " हज़ूर जब अफ्रीका आएं तो हमारे स्कूल की नींव रखें। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया , "मुझे नहीं पता कि मैं वहां कब आ रहा हूं।" अगर आपको अपना स्कूल बनाने में कोई मदद चाहिए तो हम करेंगे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मुरब्बी सिलिसला को हिदायत दी कि हम तुरंत वहां एक प्राथमिक विद्यालय शुरू कर सकते हैं। प्राथमिक विद्यालय शुरुआत में तीन कक्षा के ब्लॉक के साथ शुरू होना चाहिए फिर आवश्यकता के अनुसार विस्तार जारी रहेगा।

महोदय ने बताया कि जब मैं अस्पताल में हुज़ूर अनवर की तस्वीर देखी जो वहाँ दीवार पर लगी थी तो मैंने उसी समय तय कर लिया था कि मैं इस अस्पताल की अनुमति पाने के लिए कोशिश करनी है और मैंने इस पर बहुत काम किया है।

मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला को सिनीगाल, आने के लिए आमंत्रित किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "जब अफ्रीका का दौरा बना और गए तो उस अवसर पर देख लेंगे। अल्लाह तआला आप की इच्छाओं को पूरा करे।

हुज़ूर अनवर ने कहा: अफ्रीका में बहुत सारे संसाधन हैं। आवश्यकता यह है कि सरकार न्याय के साथ अपने संसाधनों का उपयोग करे तो मैं मैं विश्वास करता हूं कि कि अफ्रीका एक दिन दुनिया का नेतृत्व करेगा।

इस पर मोरतान साहिब कहने लगे कि अल्लाह तआला ने हमें गैस और पेट्रोल दिया है, फिर हुज़ूर अनवर ने फरमाया " अल्लाह तआला उसे सही उपयोग की तौफीक़ प्रदान करे। "नाइजीरिया में पेट्रोल भी है और इसका कोई सही उपयोग नहीं है, इसलिए देखें कि आर्थिक स्थिति क्या है। ख़ुदा तआला ने उन्हें संसाधन तो दिए हैं, अब इसे उचित रूप से उपयोग करें।

ख़लीफा मुरीद के प्रतिनिधि अल्हाज फ़ॉलो सीला साहिब ने अर्ज़ किया कि ख़लीफा ने हुज़ूर अनवर के लिए संदेश दिया है कि जमाअत अहमदिया यूरोप में जो इस्लाम का संदेश पहुंचा रही है और इस्लाम की ऐसी सेवा कर रही है जो हम नहीं कर सकते। जमाअत का यह काम देखकर हम जमाअत के साथ हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "वास्तविकता यह है कि विश्वासों के मतभेद के साथ मिलकर काम किया जाए। मिल कर काम किया जाए तो हम इस्लाम के लिए भी बहुत कुछ काम कर सकते हैं और यूरोप में भी काम कर सकते हैं।

अंत में हुज़ूर अनवर ने शुक्रिया अदा किया कि आप अगले वर्ष जलसा सालाना यू. के में आने की कोशिश करनी चाहिए। इस जलसा का अपना नज़ारा है। जंगल में एक शहर आबाद किया जाता है, और वह नज़ारा अफ्रीका में रहने वालों को पसंद किया जाता है।

मुलाकात 7 बज कर 55 मिनट तक जारी रही। अंत में दोनों मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने की सआदत पाई।

बाद में कार्यक्रम के अनुसार ताज़किस्तान और लिथुआनिया से आने वाले प्रतिनिधिमंडलों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से शरफ मुलाकात पाया। ग्यारह लोग ताज़किस्तान से आए थे। जब कि लिथुआनिया से प्रतिनिधिमंडल में पचास लोग शामिल थे। इस पचास लोगों में, आज, वे दस लोगों मुलाकात का सौभाग्य पा रहे थे जिन्होंने शीघ्र वापस जाना था।

प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने अपना परिचय दिया और जमाअत का धन्यवाद दिया कि हैं कि हमें जलसा सालना जर्मनी में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया था। हम यहां आने से बहुत ख़ुश थे, उनमें से कुछ लोग इस तरह के थे जो पहली बार जलसा सालाना -में शामिल हो रहे थे। उनमें से कुछ ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

एक मेहमान ने कहा कि मुझे पाकिस्तान के इतिहास का पता है। 1983 ई में पाकिस्तान में जो अन्तिम जलसा हुआ था बहुत बड़ी संख्या में लोग शामिल थे। यह सारे संगठनों को सक्षम करने के लिए हज़रत ख़लीफतुल मसीह का एक बड़ा किरदार है। दुनिया में मुस्लिम अपने अधिकारों से अनजान हैं और हमें अपने अधिकार नहीं मिल रहे हैं। मैं जानना चाहता हूं कि हुज़ूर का दृष्टिकोण क्या है।?

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: दृष्टिकोण यह है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि ने जो भविष्यवाणी फरमाई थी कि अंतिम समय में जब मसीह और महदी आएगा, सभी मुसलमानों को एक हाथ पर एकत्रित करेगा, "अला उम्मतन वाहिदा" और दुनिया में ग़ैर मुस्लिमों को तब्लीग़ कर के इस्लाम का संदेश पहुंचाएगा, मुसलमान बनाएगा, उसे तो मानते

नहीं हैं, इमाम स्वीकार नहीं करते क़ुराने करीम में जो काफिरों की स्थिति बताई गई है कि "कुलोबहुम शत्त" कि उनके दिल टूट गए हैं। तो आज के मुसलमानों के यह हाल हो रहे हैं। आपस में एक दूसरे के साथ लड़ रहे हैं। यदि मुस्लिम एक बन जाएं संप्रदायों को खत्म करें तो यह ठीक हो जाएगा। अगर मसीह और महदी को नहीं मानना तो कम से कम सरकारों को तो एक साथ होना चाहिए। अब कोई भी मुस्लिम सरकार ऐसी नहीं है जो एक-दूसरे के साथ सहयोग कर रही हो। हर कोई एक-दूसरे के ख़िलाफ है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया :अगर दुनिया के मुसलमान एक हो जाएं तो एक बहुत बड़ी शक्ति है और वह जो अल्लाह तआला ने प्रणाली जारी की हुई है तो एक हाथ में जमा होने के लिए इसे स्वीकार करना होगा। इस प्रणाली के बारे में अल्लाह तआला सूरत जुम्अ: में उल्लेख किया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे विभिन्न हदीसों में अधिक खोलकर उल्लेख किया है तो यही एक रास्ता इस्लामी दुनिया को एकजुट करने के लिए है कि अल्लाह तआला के भेजे हुए इमाम को मान लें ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "हम अहमदी बहुत कम हैं। हमारे पास शक्ति नहीं है। हमारे पास धन नहीं है। तेल का धन नहीं है। कोई सोना नहीं है सऊदी अरब में तेल है और इस्लामी देशों में भी तेल है। सरकारें भी है, लेकिन उन्हें इस्लाम का प्रचार करने और इस्लाम की सही छवि दिखाने की तौफीक़ नहीं मिल रही। अगर तोफीक़ प्राप्त हो रही है, तो अहमदिया जमाअत को प्राप्त हो रही है। और थोड़े से संसाधनों के साथ हम इसे पूरी दुनिया में कर रहे हैं। यह क्या दिखा रहा है? इसका मतलब है कि अल्लाह तआला की सहायता काम कर रही है, इसलिए यह काम अल्लाह तआला की सहायता के बिना नहीं किया जाता है। जबकि मुसलमान हमारे ख़िलाफ फत्वे दे रहे हैं और हमारे कार्यों को रोकने की कोशिश करते हैं, कियह ग़ैर मुस्लिम हैं उन की बातों को मत सनो। अत: अल्लाह तआला की आवाज़ सुनें, अपने नबी की आवाज़ को सुनें, तो हम प्रगति करेंगे। यही मेरा जवाब है।

एक मेहमान ने निवेदन किया कि मेरी इच्छा है कि मैं उल्लेख करना चाहता हूं। रूस और उसके मध्य एशिया के देशों में पर्दे के संदर्भ में, आज दाढ़ी और इस्लाम की सच्चाई के बारे में तस्वीर ख़राब हो रही है। दो दिन पहले, ताज़किस्तान के कुछ बच्चे स्कूल नहीं आए थे क्योंकि उन्होंने हिजाब पहना था। उन्होंने उन्हें प्रवेश नहीं किया। मैं हुज़ूर से दुआ का निवेदन करता हूं कि इस समय तानाशाह लोग वहां पर हैं, वे अब वहां से चले जाएं और उस के स्थान पर अच्छे दिमाग़ के लोग आएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "यदि अच्छे दिमाग के लोग आते हैं, तब भी कोई परिवर्तन नहीं होगा, क्योंकि उन के पास पैसा नहीं है तथा साहस नहीं रखते हैं। तो जब कोई व्यक्ति सरकार में आता है तो वह अपनी कुर्सी सुरक्षित रखता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आना तो उन्हीं लोगों ने है जो राजनीति में हैं ये वही लोग हैं जिन्हें यह बड़ी शक्तियां आशीर्वाद देती हैं। और यह दज्जाल की शक्तियों की चाल है कि और तो कोई धर्म अपनी असली हालत में रहा नहीं और बाईबल में जो परिवर्तन पहले हुए हैं उनके अलावा अब तो शिक्षा का पालन करना भी बिल्कुल छोड़ दिया है। समलैंगिक शादी अन्य चीजें हैं जो अब वैध हैं, लेकिन कुरआन की शिक्षा असली स्थिति में है। ये लोग चाहते हैं कि जिस तरह हमारी शिक्षाओं बदली गई हैं इस तरह इस्लाम की शिक्षाओं को भी बदला जाए। इस लिए पहला कदम तो उन्होंने यह उठाया कि स्कूलों से लड़कियों के सिर से हिजाब उतारो फिर धीरे धीरे बाकी चीजें भी करते रहेंगे और यह भी चौंकाने वाला है कि कुरआन को भी नए युग के साथ चलना चाहिए। यहाँ पश्चिमी प्रेस भी मुझ से पूछता है तो उन्हें कहता हूं कि आप लोग यह चाहते हो कि तुम्हारी जो सोच और बुद्धि है उसके अनुसार धर्म चले हालांकि अल्लाह तआला से जो शिक्षा आती है अपने पीछे चलाने के लिए आती है न कि मनुष्यों का पालन करने के लिए। यह तो एक मुस्लिम देश है। मुस्लिमों को चाहिए कि खड़े हो जाएं और अपनी शिक्षाएं जो हैं अपनी परंपराएं जो हैं उन्हें स्थापित करने के लिए उन्हें व्यवस्थित करना चाहिए। अब इस्लाम की शिक्षा को सुरक्षित करना हर मुसलमान का कर्तव्य है।

इस पर मेहमान ने सवाल किया कि इस स्थिति में यह सवाल उठता है कि बच्चियों को हिजाब के बिना स्कूल जाना चाहिए या वे घर बैठ जाएं?

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : नहीं, ठीक है अस्थायी रूप से करें इस के लिए कोशिश करें। शोर करें कि हमारी परंपराओं को बनाए रखा जाना चाहिए। और यह ग़लत बात है कि किसी को मजबूर किया जाए कि वे अपनी मर्ज़ी पर न चले।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यहाँ इन पश्चिमी देशों में स्कूलों में जब कोई प्रतिबंध लगाते हैं कई बार लोकल प्रशासन स्कूलों में कार्रवाई करता है। हमारी लड़कियां वहां खड़े हो जाती हैं। उसके बाद, उनके पक्ष में भी केस हो जाते हैं और फिर प्रशासन स्वीकार कर लेती है कि ठीक है कर लो। आपको अपने उल्मा को कहें कि अपनी आवाज़ उठाएं और अपनी सरकार को समझाएं। तुम्हारे उल्मा केवल, पैसे खाने के लिए रह गए हैं।

मेहमान उल्मा ने यह कहा कि हमारे यहां कि जो उल्मा हैं उन्होंने विशेष रूप से लेनिन की मूर्ति को ठीक किया है इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि माशा अल्लाह उस को तो ठीक करेंगे परन्तु जो अपनी धार्मिक अवस्था है उस को ठीक नहीं करते।

मुबल्लिग़ सिलसिला की पत्नी ने अर्ज़ किया कि जहां तक पक्ष लेने का सवाल है वहाँ तो सदर को इतना महत्व देते हैं ये लोग कि लड़कियां सोच भी नहीं सकतीं इस विषय में कि खड़े हों उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : लड़कियां नहीं सोच सकतीं लेकिन उल्मा के माध्यम से आवाज़ उठाएं और सदर को लिखें।

महोदया ने कहा कि उन में साहस नहीं है कि सदर को पत्र लिखें। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "नहीं लिखें, तो न जाएं स्कूल। क्या आप तुम पाकिस्तानी हो? बच्चों को मत भेजें। बस खड़े हो जाएं, आपको बलिदान देना होगा।

एक छात्र जो फिजियोथेरेपी का कोर्स कर रहा है, उन्होंने पूछा कि हुज़ूर ने इस तरह क्या किया कि इस स्थान पर पहुंचे हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "मैंने तो कभी नहीं चाहा कि इस स्थान पर हूं। यह एक दुविधा है जिसे अभी तक हल नहीं किया जा सका।

एक मेहमान ने कहा कि मुझे अपने मामलों के बारे में संदेह में रहता हूं। इस पर हुज़ूर अनवर ने उससे पूछा: क्या आप ख़ुदा तआला पर विश्वास करते हैं?

इस पर मेहमान ने कहा बिल्कुल रखता हूं, ईसा अलैहिस्सलाम पर इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि जो भी आप विश्वास रखते हैं विश्वास तो रखते हैं विश्वास तो है। ख़ुदा तआला से दुआ करें और अगर आप अपने बारे में शंका में हैं तो इस का अर्थ यह है कि आप का विश्वास दृढ़ नहीं है और इस के लिए ख़ुदा तआला से दुआ करनी चाहिए कि वह आप को सीधा रास्ता दिखा दे और आप के ईमान को मज़बूत करे। मुझे लगता है कि अगर आप दृढ़ता से कुछ दिन दुआ करते हैं तो आपका विश्वास और ईमान मजबूत हो जाएगा।

लिथुआनिया की एक महिला ने कहा कि मुझे सम्मानित प्राप्त हुआ है कि मैंने लिथुआनियाई भाषा में हुज़ूर के कुछ भाषणों का अनुवाद किया है और मैंने हमेशा इसका आनंद लिया है। मेरी कोशिश होती है कि मैं सही शब्दों का चुनाव करूं ताकि दर्शकों को हुज़ूर अनवर की बातें समझ आ सकें लेकिन ऐसा व्यक्ति जिसे ज्ञान कम है इसे अनुवाद करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ताकि हुज़ूर अनवर की बातों का यथा शक्ति अनुवाद कर सके।

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: तो आप मेरे भाषणों का अंग्रेजी से ल्थवेनीन भाषा में अनुवाद करती हैं? और कुछ उन में से उर्दू भाषा में होते हैं और उनका अंग्रेज़ी में अनुवाद किया जाता है और फिर आप अंग्रेज़ी ल्थवेनीन भाषा में करती हैं तो कभी-कभी अंग्रेजी अनुवाद में बाधा पढ़ जाती है, जो आपको कुछ हद तक कन्फियूज़ करता होगा, इसलिए मैं कहूंगा कि आपको उर्दू सीखनी होगा। ताकि आप मेरे उर्दू भाषा में भाषणों का अनुवाद कर सकते हैं। मुझे उर्दू से अंग्रेजी अनुवाद का स्तर नहीं पता। वे भाषण जो अंग्रेज़ी में होते हैं, मुझे लगता है कि आपको लिथुआनियाई में अनुवाद करना आसान लगेगा। यह आपका अनुभव है। इसका अर्थ यह नहीं है कि आप भ्रमित हैं बल्कि भाषा है।

महोदया ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर आप के भाषण बड़े गहरे होते हैं और उनकी बातों का जो प्रभाव लोगों पर हो रहा है अब पता नहीं कि क्या मैं इस योग्य हूँ कि मैं उन का पूर्ण रूप से इस प्रभाव को दूसरी भाषा में स्थानांतरित कर सकूँ या नहीं।

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया:

भाषण के कुछ शब्द या वाक्यांश इतने शक्तिशाली होते हैं कि आप को यह आशंका है कि आप उन्हें ठीक तरह समझ नहीं पाएंगी और अपने जीवन में लागू नहीं कर सकेंगी? या आपको लगता है कि लोगों को क्या इन चीजों का पालन करना मुश्किल है?

इस पर महोदया ने कहा: मैं समझती हूं कि हर अनुवादक अपने कंधे पर बोझ लिए होता है कि उस ने बात को पूर्ण रूप से लोगों तक पहुंचने के लिए अन्य भाषा में अनुवाद करना है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "यह वैसे भी एक मुश्किल काम है। आदमी तब तक वर्णन नहीं कर सकता जब तक मूल भाषा पर अधिकार न हो जाए। आप जिस हद तक कर रहे हैं वह ठीक है।

एक महिला ने कहा कि मेरा नाम ओकसे अहमद है। मैं लिथुआनिया से हूं, लेकिन वर्तमान में जर्मनी में हूं। मेरा अनुरोध है कि मेरे परिवार के लिए दुआ करें कि हमें लिथुआनिया जाने की तौफीक मिले। मेरी अंग्रेज़ी बहुत अच्छी नहीं है इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया "मुझे लगता है कि आप ने मुझे पहले यह बात बताई थी। महिला ने कहा कि मैंने आपको एक पत्र लिखा था।

एक महिला ने कहा: मेरा नाम औरीलिया है। मेरा सवाल यह है कि पुरुष महिलाओं से मिलने से क्यों मना करते? मैं महिलाओं के सम्मान को समझती हूं लेकिन मैं इसके मूल और कारण को जानना चाहती हूं।

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया इस्लाम की यह शिक्षा है कि जहां थोड़ा सी भी आशंका हो वहां बात सीधे रास्ता और सही सोच से इन्सान को हटा देगी तो इंसान को उस से बचना चाहिए। इस्लाम का कहना है कि पुरुष इतने आश्वस्त नहीं हैं। यह मर्द की मानसिकता के कारण है कि इस्लाम ने यह आदेश दिया है, न इस कारण से के हम औरतों को तुच्छ समझते हैं। इसलिए, इस्लाम कहता है कि चाहे तुम नेक हो हो या नहीं, बेहतर यही है कि बचो सिवए रक्त संबंधों से मेल जूल। आज देखें कि दुनिया ने इस बात को समझ लिया है। वालीवुड को देखें कि कितना शोर मचा हुआ है मर्दों के बारे में। यहां तक कि बर्लिन में भी एक संगीत समारोह था जहां महिलाएं अलग थीं।

अब कई आयोजन हैं जो महिलाओं के लिए आयोजित किए जा रहे हैं। क्यों? कुछ समस्या तो है जिस के कारण से यह तथ्य सामने आए हैं कि महिलाओं की गतिविधियां अलग हों, यह केवल महिलाओं के सम्मान के लिए है। अन्यथा यदि आप किसी भी कठिनाई में हैं और सहायता की आवश्यकता है, और आप मुझे या किसी अन्य मुसलमान को देखेंगी कि मदद के लिए सब से आगे होगा। यदि आप ज़मीन पर पड़ी हैं बीमार हैं या परेशानी में हैं, या कोई और कष्ट है तो मैं आपको उठाऊंगा और उठाने के लिए शरीर को छूना पड़े तो छूऊंगा। इसलिए, जहां भी हमें इसकी आवश्यकता है, हम करेंगे, लेकिन बिना मजबूरी के कोई ज़रूरत नहीं कि हाथों को मिलाया जाए।

ताजिकिस्तान से आने वाले एक मेहमान मिर्ज़ा रहीम, जो एक राजनेता हैं, ने अपनी टिप्पणी में कहा। मुझे जलसा में पहली बार शामिल होने का मौका मिला और मैंने जमाअत अहमदिया को बारीकी से देखा है। सभी काम करने वालों का जोश मेरे लिए एक उदाहरण है कि पूरे दिन कैसे काम करना है। मेरे दिमाग़ में कई सवाल थे। हुज़ूर अनवर से मुलाकात के दौरान, मेरे सभी सवालों के जवाब मिल गए।

हुज़ूर अनवर का व्यक्तित्व बहुत नूर वाला है, हुज़ूर को देख कर और जमाअत अहमदिया के लोगों को देख कर पता चला है कि आज एकता केवल जमाअत अहमदिया के पास ही है हुज़ूर अनवर को राजनीतिक मामलों और दुनिया के हालात पर माहारत प्राप्त है। मैं समझता हूं कि जमाअत अहमदिया भविष्य में सभी मुसलमानों को जमा कर सकती है, मुझे यह जमाअत अपने लक्ष्य में बहुत गंभीर लगती है। मैं हमेशा इस जलसा को और हुज़ूर अनवर की मुलाकात को याद रखूंगा।

एक मेहमान दिल अफरोज़ सतूमह साहिबा जो कि विश्वविद्यालय में एक व्याख्याता हैं वर्णन करती हैं: मैं जलसा की व्यवस्था से बहुत प्रभावित हूं। मैंने पहली बार आतिथ्य और सहयोग का इस तरह के उदाहरण को देखा है। जमाअत अहमदिया को यहां बहुत आज़ादी है। हुज़ूर अनवर ने लजना को जो संबोधित फ़रमाया वह आज की समस्याओं का वास्तविक समाधान है। काश इस पर सारी दुनिया अनुकरण करती। मुझे हुज़ूर अनवर से मिलने का मौका मिला। हुज़ूर अनवर को पत्रकारिता और आज के मीडिया मुद्दों तक पर्याप्त पहुंच है। मुलाकात से पहले, मेरा मानना था कि हुज़ूर अनवर एक आध्यात्मिक व्यक्तित्व हैं। लेकिन मुलाकात के बाद, पता चला कि हुज़ूर अनवर रूहानी व्यक्तित्व होने के साथ साथ दुनिया की विभिन्न समस्याओं के के बारे में जानकारी भी है। और हुज़ूर उन को हल जानते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया :कि आज की दुनिया में मीडिया उपद्रव फैलाने में साथ है। आज अगर मीडिया चाहे तो दुनिया में शांति में भूमिका अदा कर सकता है। मेरी शुभकामनाएं जमाअत अहमदिया और हुज़ूर अनवर के साथ हैं।

सदर जमाअत अहमदिया तजाकिस्तान कहते हैं: जलसा सालाना जर्मनी में दूसरी बार शामिल हो रहा हूं। सारी व्यवस्था बहुत अच्छी थी यह सब ख़िलाफ़त की बरकत है। हिजाब के बारे में हुज़ूर अनवर का विस्तृत जवाब बहुत अच्छा लगा। मुझे लगता है कि हुज़ूर अनवर इस उम्र की महिलाओं के अधिकारों के बारे में बहुत चिंतित हैं। आज जमाअत अहमदिया ही है जो हुज़ूर अनवर के नेतृत्व में महिलाओं के अधिकार इस्लामी शिक्षा की रोशनी में उजागर कर रही है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ महिला को पर्दा वाली बना कर समाज तथा अगली पीढ़ी को संरक्षित कर रहे हैं।

लिथुआनिया के एक प्रतिनिधिमंडल में एक महिला, आऊरीएनतोरा साहिबा शामिल थी। महोदया ने कहा कि जलसा का वातावरण बहुत प्यारा और मैत्रीपूर्ण था। हर कोई एक-दूसरे से प्यार से पेश आ रहा था। मैं एक लम्बे समय से जीवन के उद्देश्य के बारे में सोच रही थी। इस जलसा में भाग लेने के बाद, मैंने पाया कि जीवन का उद्देश्य दूसरों के साथ दूसरों की सेवा करना है।

लिथुआनिया से आए एक छात्र ईमिस वेंग्रास्कस ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि जलसा में इस्लाम की मूल तस्वीर देखने का अवसर है, जो मीडिया को दिखाने में असमर्थ है। मेरे लिए सबसे प्रभावशाली बात लोगों और उनके चेहरे और उनकी मुस्कुराहटों का आपसी स्नेह है। आपका ख़लीफा का व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली है। वह साक्षात प्यार हैं। उन को देख कर लगता है कि मुहब्बत को जिस्म के रूप में देख रहा हूं।

Mrs सोल बुलवाइट ने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा, "मुझे जलसा में शामिल होने और ख़लीफा से मिलने का दूसरा मौका है। यह जलसा मेरे पिछले जलसा से बेहतर है, क्योंकि इस बार मुझे इस्लाम का ज्ञान पहले से कहीं अधिक हुआ है। लिथुआनिया में हुज़ूर अनवर की ख़िताबों का अनुवाद करने के बाद मैं कह सकती हूं कि वह एक हिदायत की रोशनी का एक सार हैं और जो जीना चाहता है उससे लाभ उठा सकता है।

लिथुआनिया से एक मेहमान श्रमती Dalia Umbrasiene ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: जलसा में शामिल हो मुझे, आपकी जमाअत की परंपरा देखने का मौका मिला। मैं जलसा के प्रग्रामों और व्यवस्थाओं से बहुत प्रभावित हूं। आपके ख़लीफा के साथ मुलाकात ने बहुत गहरा प्रभाव छोड़ा है। मैं हर किसी के लिए शुभकामनाएं व्यक्त करती हूं।

लिथुआनिया से आने वाली एक औरत श्रीमती औसरा उम्ब्रसाइट ने अपने विचार व्यक्त किए, " मैं पहली बार जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हो रही हूं और मैंने यहां बहुत कुछ सीखा है। इस समय में, इस तरह के जलसों का बहुत महत्व हैं, क्योंकि आम तौर पर इस्लाम के बारे में कई ग़लतफहमियां हैं। जमाअत अहमदिया की यह सुन्दरता है कि अन्य धर्मों के लोगों को भाग लेने के लिए आमंत्रित करती है। इस्लाम के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए इस्लाम के सच्चे शिक्षण के कार्यान्वयन करने का हौसला प्राप्त होता है और इस प्रकार मुसलमानों और गैर-मुसलमानों की दूरियां समाप्त हो सकती हैं। मेरे लिए यह बहुत बड़ा सम्मान है कि मुझे इस जलसा में शामिल होने का अवसर मिला।

ताजकिस्तान और लिथुआनिया के मेहमानों के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की यह मुलाकात लगभग दो बजे तक जारी रही। अंत में, प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने बारी बारी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ ख़िचवाई।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 17 January 2019 Issue No. 3

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फर्माया

कि अगर मैं सच हूँ तो मस्जिद तुम को मिल जाएगी।

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह तआला फरमाते हैं

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में एक बार कपूरथला के अहमदियों और ग़ैर अहमदियों का वहां की एक मस्जिद के बारे में मुकदमा हो गया। जिस जज के पास यह मामला था उसने विरोधी रवैया इख़्तेयार करना शुरू कर दिया। इस पर कपूरथला की जमाअत ने घबरा कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दुआ के लिए लिखा । हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसके जवाब में उन्हें फर्माया कि अगर मैं सच हूँ तो मस्जिद तुम को मिल जाए गी। मगर दूसरी ओर न्यायाधीश ने अपना विरोध जारी रखी और आख़िर उसने अहमदियों के खिलाफ फैसला लिख दिया। मगर दूसरे दिन जब वह फैसला सुनाने के लिए अदालत में जाने की तैयारी करने लगा तो इस ने नौकर से कहा । मुझे बूट पहना दो। नौकर ने एक बूट पहनाया दूसरे अभी पहना ही रहा था कि खट की आवाज़ आई। उसने ऊपर देखा । तो जज का हार्ट फेल हो चुका था। उस के मरने के बाद दूसरे जज को नियुक्त किया गिया। और उस पहले निर्णय को बदल कर हमारी जमाअत के पक्ष में फैसला दिया । जो दोस्तों के लिए एक बहुत बड़ा निशान साबित हुआ और उन के ईमान आसमान तक जा पहुँचे।

सारांक्ष यह कि अल्लाह तआला की यह सुन्नत है कि वे अपने नबियों के द्वारा निरंतर ग़ेब के समाचार देता है । जिन के पूरा होने पर मोमिनों के विश्वास और भी उन्नति कर जाते हैं। यह अनदेखी की खबरों का ही नतीजा था कि जो लोग मुहम्मद रसूलुल्लाह परईमान लाए उनके दिल इतने मजबूत हो गए कि और लोग तो मृत्यु को देखकर रोते हैं मगर सहाबा में से किसी को जब ख़ुदा तआला के रास्ते में जान देने का अवसर मिलता तो वह खुशी से उछल पड़ता। और कहता फुज़तो व रब्बिलकअबते काबा के रब्ब की कसम ! मैं कामयाब हो गया। आख़िर यह भावना उनके अंदर कहा से आ गई थी। यह वही रूह थी जो अल्लाह तआला ने मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ग़ैब की ख़बर बता बता कर मोमिनों के अंदर भर दी थी। अगर उन पर ग़ैब का प्रकटन न होता तो वह इस उच्च स्थान पर कभी खड़े न होते जिस पर मुसलमान पहुँचे। अत: यह दोनों बातें अपनी जगह मनुष्य के लिए लाभ के लिए हैं । ग़ैब भी अपनी जगह फायदा देने वाला और इनकशाफे ग़ैब भी अपनी जगह लाभ देने वाला है। सारे आनन्द ग़ैब के साथ हैं और सारी आध्यात्मिकता ग़ैब के खुलने के साथ जुड़ी है।"

(तफ़सीरे कबीर भाग 7 पृष्ठ 67)

हवा के दोश पे रक्खे हुए चराग़ हैं हम

उबैदुल्लाह अलीम

ख़यालो-ख़्वाब हुई हैं मुहब्बतें कैसी
लहू में नाच रही हैं ये वहशतें कैसी
न शब् को चाँद ही अच्छा न दिन को मेह्र अच्छा
ये हम पे बीत रही हैं क़यामतें कैसी
वो साथ था तो ख़ुदा भी था मेहरबाँ क्या क्या
बिछड़ गया तो हुई हैं अदावतें कैसी
हवा के दोश पे रक्खे हुए चराग हैं हम
जो बुझ गए तो हवा से शिकायतें कैसी
जो बे-ख़बर कोई गुज़र तो ये सदा दी है
मैं संगे-राह हूँ, मुझ पर इनायतें कैसी
नहीं कि हुस्न ही नैरंगियों में ताक़ नहीं
जुनूँ भी खेल रहा है सियासतें कैसी
ये दौरे-बे-हुनरां है बचा रखो ख़ुद को
यहाँ सदाक़तें कैसी, करामतें कैसी

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

खुला रखा है और विवशता के समय स्त्रियों के लिए भी मार्ग खुला है कि यदि पुरुष बेकार हो जाए तो न्यायाधिकारी द्वारा खुला करा लें, जो तलाक के स्थान पर है। ख़ुदा की शरीअत दवा बेचने वाली दुकान की भांति है। यदि दुकान ऐसी नहीं है जिसमें से प्रत्येक रोग की दवा मिल सकती है तो वह दुकान चल नहीं सकती। अत: विचार करो कि क्या यह सत्य नहीं कि पुरुषों के समक्ष कुछ ऐसी समस्याएँ आ जाती हैं जिनमें वह दूसरे विवाह के लिए विवश होते हैं। वह शरीअत किस काम की जिसमें समस्त समस्याओं का समाधान न हो। देखो इंजील में **तलाक** के बारे में केवल बलात्कार की शर्त थी। अन्य सैंकड़ों प्रकार के ऐसे कारण जो पुरुष और स्त्री में जान लेने वाली शत्रुता उत्पन्न कर देते हैं उनका कोई उल्लेख नहीं था। इसलिए ईसाई जाति इस दोष को सहन न कर सकी और अन्तत: अमरीका में एक तलाक का कानून बनाना पड़ा। अत: अब विचार करो कि इस कानून से इंजील किधर गई। हे स्त्रियो चिंता न करो, तुम्हें जो पुस्तक मिली है उसमें इंजील की भांति मनुष्यों की ओर से कुछ मिलाने की आवश्यकता नहीं। उस पुस्तक में जिस प्रकार पुरुषों के अधिकार सुरक्षित हैं स्त्रियों के अधिकार भी सुरक्षित हैं। यदि स्त्री, पुरुष के एक से अधिक विवाह पर नाराज़ है तो न्यायधीश द्वारा ख़ुला करवा सकती है। ख़ुदा का यह कर्तव्य था कि विभिन्न परिस्थितियां जो मुसलमानों के समक्ष आने वाली थीं, अपनी शरीअत में उनका उल्लेख कर देता ताकि शरीअत अपूर्ण न रहती। अत: हे स्त्रियो तुम अपने पतियों की उन इच्छाओं के समय कि वे दूसरा विवाह करना चाहते हैं ख़ुदा की शिकायत मत करो बल्कि तुम प्रार्थना करो कि ख़ुदा तुम्हें मुसीबत और परीक्षा की घड़ी से सुरक्षित रखे। नि:संदेह वह पुरुष नितांत अत्याचारी एवं दंडनीय है जो **दो पत्नियां** रख कर न्याय नहीं करता। परन्तु तुम स्वयं ख़ुदा की अवज्ञा करके ख़ुदा के प्रकोप की पात्र न बनो। प्रत्येक अपने कर्म का उत्तरदायी होगा। यदि तुम ख़ुदा की दृष्टि में सुशील और नेक बनो तो तुम्हारा पति भी सुशील और नेक किया जाएगा। यद्यपि कि शरीअत ने विभिन्न दूरदर्शिताओं के कारण एक से अधिक विवाहों को वैध ठहराया है। परन्तु नियति का नियम तुम्हारे लिए खुला है। यदि शरीअत का कानून तुम्हारे लिए सहनीय नहीं तो प्रार्थना के माध्यम से नियति के कानून से लाभ उठाओ, क्योंकि नियति का कानून शरीअत के कानून पर भी विजयी हो जाता है। संयम को अपनाओ, संसार और उसके सौन्दर्य से बहुत हृदय मत लगाओ, वर्ण और जाति पर अभिमान मत करो, किसी स्त्री से हंसी-ठट्ठा मत करो, पतियों से वह कुछ न माँगो जो उनकी सामर्थ्य से बाहर हो, प्रयास करो कि तुम मासूम और सच्चरित्र होने की दशा में कब्रों में प्रवेश करो, ख़ुदा के बताए हुए कर्तव्यों- नमाज़, ज़कात इत्यादि में आलस्य मत करो, अपने पतियों की तन-मन से आज्ञाकारी रहो, उनके सम्मान का अधिकांश भाग तुम्हारे हाथ में है। अत: तुम अपने इस दायित्व को इस ख़ूबी से निभाओ कि ख़ुदा के निकट नेक और चरित्रवानों में गिनी जाओ। फ़ुज़ूलखर्ची न करो, और अपने पतियों के धन को व्यर्थ ही ख़र्च न करो, किसी की धरोहर में हेरा-फेरी न करो, चोरी न करो, शिकवा न करो। एक स्त्री अन्य स्त्री पर या पुरुष पर आरोप न लगाए।

अमन चैन है। फिर क्या अनिवार्य न था कि इस सरकार के उपकारों का धन्यवाद करते। इसी से

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 79 से 81)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad